# बाइबल क्या शिक्षा देती है ?

(भाग एक)

(द्वितीय संस्करण)

1998

लेखक
सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

Second Printing 1998

2000 Copies

मुद्रक :
प्रिंट इण्डिया,
A-38/2 मायापुरी,
नई दिल्ली

# WHAT DOES THE BIBLE TEACH ?

VOL. I

(Hindi)

by

SUNNY DAVID

PUBLISHED BY

CHURCH OF CHRIST

POST BOX 3815

NEW DELHI - 110049

## सत्य सुसमाचार

# सप्ताह में दो बार रेडियो पर सुनिये

प्रत्येक :

बृहस्पतिवार....रात को नौ बजे

रविवार..... रात को 8:45

ये कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका (सिलोन) से 19, 25 और 41 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

वक्ताः

**सनी डविड**

**मसीह की कलीसिया**

**नई दिल्ली**

# विषय सूची

बाइबल क्या शिक्षा देती है :

1 परमेश्वर के विषय में ... 1

2 मनुष्य के विषय में ... 7

3 यीशु मसीह के विषय में ... 13

4 यीशु के आने के विषय में ... 19

5 यीशु के पुनरागमन के विषय में ... 25

6 जीवन के विषय में ... 31

7 मृत्यु के विषय में ... 37

8 मृत्यु के बाद जीवन के विषय में ... 43

9 पुनरुत्थान के विषय में ... 49

10 न्याय के विषय में ... 55

11 पाप के विषय में ... 61

12 उद्धार के विषय में ... 67

# परमेश्वर के विषय में

बाइबल वास्तव में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण पुस्तक है । पृथ्वी के दृष्टिकोण से इस पुस्तक की महानता हमें इस बात में नज़र आती है, कि जगत में केवल यही एक ऐसी पुस्तक है जो शताब्दियों से प्रति वर्ष सबसे अधिक छापी तथा बेची और ख़रीदी जाती है । इसका अर्थ यह है कि दुनिया में लोग सबसे अधिक इसी पुस्तक को पढ़ते हैं । बाइबल के सम्बन्ध में एक और बड़ी ही ख़ास बात यह है, कि यही एक ऐसी किताब है जो आज अनेक भाषाओं में उपलब्ध है । हमारी पृथ्वी के ऊपर भांति-भांति की हज़ारों भाषाएं बोली जाती हैं, लेकिन बाइबल को आज लगभग इन सभी भाषाओं में प्राप्त करके पढ़ा जा सकता है । और क्या आप जानते हैं कि पृथ्वी पर सबसे पहले मशीन के द्वारा जिस पुस्तक को छापा गया था वह पुस्तक भी बाइबल ही थी ? किन्तु ऐसे ही अनेक अन्य बातों को भी बाइबल की महानता के सम्बन्ध में पृथ्वी के दृष्टिकोण से हम देख सकते हैं । लेकिन जब हम बाइबल के सम्बन्ध में स्वर्ग के दृष्टिकोण से देखते हैं तो ये सभी बातें महत्व-रहित बन जाती हैं । क्योंकि स्वर्ग के दृष्टिकोण में बाइबल परमेश्वर का वचन है । इस पुस्तक में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना और सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिये उपयोगी है ।" (२ तीमुथियुस ३:१६) । सो इस से हम यह सीखते हैं कि सम्पूर्ण बाइबल को परमेश्वर ने स्वयं अपनी ही प्रेरणा से लिखवाया है, अर्थात्

बाइबल में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह उसी की इच्छा के अनुसार लिखा गया है। और दूसरी बात हम यह भी सीखते हैं, कि बाइबल में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह सब मनुष्य की शिक्षा के लिये है, अर्थात् जिन बातों को जानने की आवश्यकता मनुष्य को है और जिन बातों को परमेश्वर मनुष्य को बताना चाहता है वे सभी बातें परमेश्वर ने मनुष्य के लिए बाइबल में लिखवाई हैं।

परन्तु परमेश्वर कौन है? यद्यपि आज जगत में करोड़ों लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं, परन्तु वास्तव में बहुत ही थोड़े ऐसे लोग हैं जो सचमुच में परमेश्वर को जानते हैं। जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो यीशु ने परमेश्वर के बारे में एक बड़ी ही विशेष बात लोगों को बताई थी। यीशु ने कहा था, कि परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।" (यूहन्ना ४:२४)। सो यीशु के कथनानुसार परमेश्वर आत्मा है। परन्तु यीशु को इस बात का ज्ञान कैसे मिला? क्योंकि वह परमेश्वर के पास से आया था। बाइबल में लिखा है कि वह आदि में वचन की नाईं परमेश्वर के साथ विद्यमान था, अर्थात् वह परमात्मा का वचन था। परन्तु मनुष्यों का पापों से उद्धार करने के लिये वह एक मनुष्य के रूप में होकर जगत में आया था। इस कारण यीशु को परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान था। वह परमेश्वर को जानता था, और यही कारण है कि वह परमेश्वर को अपना पिता कहकर सम्बोधित करता था, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से आया था। और उसने कहा था, कि परमेश्वर आत्मा है। क्या जगत में यीशु के सिवाए कोई अन्य व्यक्ति मनुष्यों को परमेश्वर के बारे में सच्चाई बता सकता है? कदापि नहीं! क्योंकि, यीशु के सिवाए और कोई कभी परमेश्वर के पास से नहीं आया। इसमें कोई संदेह नहीं है, कि परमेश्वर को जानने के लिये लोगों ने तपस्याएं की हैं; बहुतों ने जगत से सन्यास लेकर एकान्त में जंगलों में बैठकर ध्यान

लगाया है; और कुछ ने यह ऐलान भी किया है कि उन्होंने परमेश्वर को जान लिया है। परन्तु केवल यीशु ही एक ऐसा मनुष्य था जो परमेश्वर की ओर से, परमेश्वर के पास से पृथ्वी पर आया था। मैं आप को हिमालय पर्वत के बारे में बता सकता हूं। परन्तु वास्तव में हिमालय पर्वत के ऊपर क्या है यह मैं आप को नहीं बता सकता, क्योंकि मैं स्वयं कभी हिमालय पर्वत के ऊपर नहीं चढ़ा हूं। केवल वही मनुष्य जो हिमालय के ऊपर चढ़कर उससे नीचे उतर कर आया है उस पहाड़ के ऊपर की हकीकत को वास्तव में आप को बता सकता है। और क्योंकि यीशु परमेश्वर की ओर से जगत में आया था, इसलिये उस ने परमेश्वर के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा वह सच कहा, और उसने कहा था, कि परमेश्वर आत्मा है।

आज संसार में लगभग सभी लोग परमेश्वर में विश्वास करते हैं। परन्तु सभी लोग उस परमेश्वर में विश्वास नहीं करते जिसे यीशु ने मनुष्यों पर प्रकट किया था। क्योंकि यद्यपि यीशु ने यह सिखाया था कि परमेश्वर आत्मा है तौभी आज बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो पत्थरों को तथा जगत की अन्य नाशमान् वस्तुओं को परमेश्वर मानकर पूजते हैं। और ऐसा वे इसलिये करते हैं क्योंकि शताब्दियों से लोग ऐसा ही करते आ रहे हैं। जब परमेश्वर ने अपने आप को यीशु के द्वारा जगत पर प्रकट नहीं किया था, उस समय मनुष्य ने परमेश्वर की अनेक भिन्न-भिन्न आकृतियां बना ली थीं। तब मनुष्य को यह अनुभव तो था कि परमेश्वर है, परन्तु वह उसे जानता नहीं था; उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि वह परमेश्वर कौन है या क्या है। किन्तु उसे यह आभास था कि यदि मनुष्य आत्मा है तो अवश्य ही कोई परम-आत्मा भी है। वह आकाश में तथा पृथ्वी के ऊपर अनेकों ऐसी वस्तुओं को देखता था, जो बड़ी ही अद्भुत तथा विद्यमान थीं। और वह जानता था, कि यदि कुछ है तो उसका कोई बनानेवाला भी है; और जिसने इस अद्भुत सृष्टि को बनाया है वह निश्चित ही बड़ा महान् है।

लेकिन वह उसे देख नहीं सकता था। सो उसे देखने की भूख को मिटाने के लिये; और उसके प्रति अपनी श्रद्धा, तथा आदर वा सम्मान को प्रकट करने के लिये मनुष्य ने उसकी आकृतियाँ बनाना आरम्भ कर दिया। शताब्दियों से आज तक मनुष्य ने परमेश्वर को प्रत्येक उस वस्तु में ढालकर देखना चाहा है जो जगत में पाई जाती है। उसने उसकी आकृतियां मनुष्य के रूप में बनाई हैं, पशुओं के रूप में बनाई हैं; क्योंकि वह उसे देखना चाहता है। परन्तु जब यीशु इस पृथ्वी पर आया तो उसने मनुष्यों पर इस बात को प्रकट किया कि परमेश्वर कोई मनुष्य नहीं है, और वह कोई पशु सरीखा नहीं है और न ही उसकी तुलना जगत की किसी भी वस्तु के साथ की जा सकती है, परन्तु उसने कहा, कि परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके आराधक उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई के साथ करें। अर्थात् उसे फल-फूल जैसी जगत की नाशमान वस्तुएं नहीं चढाएं परन्तु अपनी आत्मा अर्थात् अपने सच्चे मन के साथ तथा उसकी इच्छानुसार उस की अराधना करें।

अकसर कुछ लोग कहते हैं, कि हमें परमेश्वर की आराधना करने के लिये उसकी एक आकृति बनाना आवश्यक है। लेकिन परमेश्वर की आराधना हम देखकर नहीं करते किन्तु विश्वास से करते हैं। उसकी एक आकृति बनाकर हम उसे सीमित कर देते हैं; हम उसका निरादर करते हैं, क्योंकि हम उसे जगत की एक ऐसी वस्तु के समान बना देते हैं जो नाशमान् है। परन्तु हम हवा को नहीं देखते, तौभी हमारा विश्वास है कि हवा है, क्योंकि हम जानते हैं कि हवा के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। कदाचित इस समय आपका रेडियो बिजली से चल रहा है, आप रेडियो से आवाज़ सुन रहे हैं, परन्तु आप बिजली को नहीं देख रहे हैं। क्या रेडियो का बजना इस बात को प्रमाणित नहीं करता कि बिजली है? इसी प्रकार, जब कोई मनुष्य एक बड़े ही कठिन प्रश्न को हल कर देता है तो आप कहते हैं

कि उसका दिमाग बड़ा शक्तिशाली है। परन्तु क्या आप ने उसके दिमाग को देखा है? क्या इस बात पर विश्वास करने के लिये कि उस कठिन प्रश्न का उत्तर उसी मनुष्य ने निकाला है यह आवश्यक होगा कि आप ऊसके दिमाग़ को उस के सिर में से निकालकर देखें? नहीं। बिल्कुल नहीं। परन्तु आप इसलिये विश्वास करते हैं क्योंकि आप ने उस प्रश्न को देखा है जिसका उत्तर उसने अपने दिमाग़ से दे दिया है। ऐसे ही हम परमेश्वर को भी स्वीकार करते हैं, देखकर नहीं, परन्तु विश्वास से। क्योंकि जगत की सृष्टि उसके अदृश्य गुणों को तथा उसकी अनन्त सामर्थ को प्रकट करती है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि "आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाश-मण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" (भजन० १९:१)।

क्या आप उस परमेश्वर में विश्वास करते हैं जिसे यीशु ने मनुष्यों पर प्रकट किया था, और जो एक मात्र सच्चा वा जीवता तथा महान् परमेश्वर है? प्रभु यीशु के कथनानुसार वह सच्चा परमेश्वर पृथ्वी पर सारे लोगों से एक समान प्रेम करता हैं। और उसने जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को बलिदान किया है, ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए वह अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर ले। प्रभु यीशु ने आज्ञा दी है कि जो उसमें विश्वास लाएगा तथा बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न लाएगा वह अपने हा पापों में नाश होगा। (यूहन्ना ३:१६; मरकुस १६:१६)।

पवित्र बाइबल में यह भी लिखा है, कि परमेश्वर पवित्र तथा धर्मी है परन्तु प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से अलग है। (यहेजकेल १८:२०-२४; रोमियों ३: २३)। परन्तु जब कोई मनुष्य परमेश्वर की बात मानकर तथा उस पर विश्वास लाकर उसकी इच्छा के अनुसार चलने लगता है तो उसका मेल फिर से परमेश्वर

के साथ हो जाता है। (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१)। इसी को उद्धार या मुक्ति कहते हैं।

क्या आपका उद्धार हो गया है ? क्या आप को मुक्ति मिल गई है ? आप को सच्चे परमेश्वर के पास आने की आवश्यकता है। क्योंकि केवल वही पाप से आपका उद्धार कर सकता है। सच्चा और ज़िन्दा परमेश्वर केवल एक ही है। और प्रत्येक मनुष्य अपने पाप के कारण उस से दूर है। किन्तु उसके पुत्र यीशु के द्वारा हम सब उसके पास आ जाते हैं। यही सुसमाचार है प्रभु आप को सामर्थ दे कि आप सभी अन्य वस्तुओं से अपना मन फिराकर उसके पास वापस लौट आएं।

# मनुष्य के विषय में

मनुष्य के सम्बन्ध में आज पृथ्वी पर एक बड़ा ही प्रचलित विश्वास यह है कि मनुष्य का विकास कुछ छोटे जीव-जन्तुओं के द्वारा हुआ है। आज प्रत्येक स्कूल के भीतर बालकों को सिखाया जा रहा कि मनुष्य आरम्भ से ऐसा नहीं है परन्तु धीरे-धीरे उसका विकास हुआ है। यहां तक कि संसार में उन देशों के अधिकांश लोग भी जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं ऐसा ही सोचते हैं कि मनुष्य का विकास छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं के द्वारा हुआ है। आज विकासवाद की अनेक धारणाएं हैं, और एक बड़ी ही प्रसिद्ध धारणा यह है, कि आरम्भ में केछ तत्व थे और एक बार उन तत्वों में एक बड़े जोर का धमाका हुआ था और उसके परिणाम स्वरूप जगत की सृष्टि हो गई! था परन्तु प्रश्न यह है कि आरम्भ में वे तत्व कहां से आए? इसका उत्तर वे लोग नहीं दे सकते। परन्तु पृथ्वी पर मनुष्य कहां से आया? इसका उत्तर वे यह कहकर देते हैं, कि आरम्भ में बे-जान तत्वों मे जीवन निकला था, और फिर उन छोटे-छोटे कीटाणुओं का विकास होता चला गया। वे परिवर्तित होकर बड़े-बड़े जन्तु बन गए और फिर उनका विकास हुआ तो उनमे पशु अर्थात् बन्दर आदि बन गए और फिर बन्दरों से मनुष्य का विकास हो गया। यद्यपि सदियों से इस धारणा को प्रमाणित करने के लिए अनेक लोग प्रयत्नशील हैं, परन्तु आज तक इसे कोई भी प्रमाणित नहीं कर पाया है। क्यों? क्योंकि मनुष्य आज भी मनुष्य है और उसका विकास नहीं हो रहा हैं,

अर्थात् वह मनुष्य से कुछ और नहीं बन रहा है। और पशु आज भी पशु है जो बन्दर था वह बन्दर है, और बन्दर ही रहेगा।

यद्यपि एक प्रकार से तो मनुष्य का विकास अवश्य हुआ है, अर्थात् मनुष्य ने कई बातों में बड़ी उन्नति की है। पहिले मनुष्य के पास बिजली नहीं थी, परन्तु उसने बिजली की खोज की और बिजली से चलनेवाले अनेक यन्त्रों को बनाया। आने-जाने के साधन के लिये मनुष्य ने मोटर गाड़ियां, रेलें, और हवाई जहाज़ बनाए हैं। और इसी प्रकार अनेक अन्य ऐसी वस्तुओं की खोज पिछले कुछ वर्षों में मनुष्य ने की है, जिनके विषय में सदियों पहिले मनुष्य सोच भी नहीं सकता था। परन्तु मनुष्य आज भी वही मनुष्य है जो वह आरम्भ में था, उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है, वह बदला नहीं है। वह मनुष्य था और मनुष्य ही रहेगा। परन्तु यदि मनुष्य का विकास किसी अन्य जीव या जन्तु से नहीं हुआ है तो फिर पृथ्वी पर मनुष्य कहां से आया ? यह प्रश्न वास्तव में बड़ा ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि मनुष्य का विकास पशुओं से हुआ है और पशुओं का विकास अन्य जन्तुओं तथा कीटाणुओं से हुआ है और वे बे-जान जन्तु तत्वों से उत्पन्न हुए थे, तो फिर मनुष्य मात्र भौतिक है। वह आज है और कल पशुओं के समान मर जाएगा और हमेशा के लिए मिट जाएगा। उसके पास कोई आशा नहीं है, उसके पास कोई भविष्य नहीं है। परन्तु यदि हम इस बात को मानने को तैयार नहीं हैं, तो फिर मनुष्य क्या है ? वह पृथ्वी पर कहां से आया है ?

बाइबल, परमेश्वर के वचन की पुस्तक हमें बताती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया है, वास्तव में, बाइबल कहती है कि आकाश तथा पृथ्वी और सम्पूर्ण जगत की रचना परमेश्वर ने की है। यद्यपि बाइबल न तो एक विज्ञान की पुस्तक है और न ही एक इतिहास की पुस्तक है तौभी बाइबल में हमें यह बात पढ़ने को मिलती है कि मनुष्य को आरम्भ में परमेश्वर ने

बनाया था। बाइबल को परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है, इस पुस्तक को उसने मनुष्य के लिए लिखवाया है, ताकि मनुष्य यह जाने कि वह कौन है और वह कहां से आया है, और पृथ्वी पर वह किस उद्देश्य से है और बाद में वह कहां चला जाता है। इस समय आप के हाथ में क्या है ? क्या यह वस्तु अपने आप ही अस्तित्व में आ गई थी या इसे किसी ने बनाया है ? क्या इस समय आप रेडियो को सुन रहे हैं। क्या आप इस समय किताब पढ़ रहे हैं ? इस समय आप क्या देख रहे हैं ? क्या ये सब वस्तुएं अपने आप बनकर तैयार हो गई हैं ? प्रत्येक यंत्र का कोई बनानेवाला है, प्रत्येक वस्तु का कोई बनाने वाला है। प्रत्येक घर का कोई बनानेवाला है। कोई भी वस्तु अपने आप परिवर्तित होकर अस्तित्व में नहीं आ सकती। मान लीजिए यदि मैं आप से कहूं कि पृथ्वी पर सब से पहिले रेल-गाड़ी का इंजन लोहे इत्यादि के टुकड़ों से बनकर अपने आप तैयार हो गया था। क्या आप इस बात को मान लेंगे? पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य, जिस में थोड़ी सी भी बुद्धि होगी, इस बात को कभी स्वीकार नहीं करेगा। क्योंकि हम जानते हैं कि यदि कोई नमुना है तो कोई उस नमुने का बनाने वाला भी है; यदि एक इंजन है तो उस का कोई इंजीनियर भी है। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है कि "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाश-मन्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है (भजन० १९:१)। सम्पूर्ण जगत में जो कुछ भी है वह सब कुछ बड़ा ही अद्भुत है और बाइबल में लिखा है, कि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है उनमें से कोई भी वस्तु अपने आप उत्पन्न होकर अस्तित्व में नहीं आई परन्तु प्रत्येक वस्तु को परमेश्वर ने बनाया है। परन्तु शायद कोई यह कहे कि मैं परमेश्वर को नहीं देखता, सो मैं कैसे जानूं कि परमेश्वर है ? क्या आपने उस कारीगर को देखा है जिसने आप की घड़ी को बनाया था ? क्या आपने उस मनुष्य को देखा है जिसने

आपकी साइकल या आप की मोटर को बनाया था ? यद्यपि आपने उनको नहीं देखा है, परन्तु ये वस्तुएं इस बात को स्वयं घोषित करती हैं कि उनको किसी मनुष्य ने बनाया है। इसा प्रकार आकाश और पृथ्वी और जो कुछ भी उनमें है वे सब वस्तुएं इस बात का प्रमाण हैं, इस बात को प्रकट करती हैं कि उनका कोई बनाने वाला है। और वह जिसने सब कुछ बनाया है, परमेश्वर है।

परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि में मनुष्य बड़ा ही अद्भुत है। वह रोकर अपने दुख को प्रकट कर सकता है और हँसकर अपनी खुशी को व्यक्त कर सकता है। मनुष्य अनुभव कर सकता है। उसके भीतर एक विवेक है जो उसे दोषी ठहराता है। वह आगे बढ़ना चाहता है; उन्नति करना चाहता है। उसने अनेक आविष्कार किए हैं और वह और भी नई-नई वस्तुओं को खोज करना चाहता है और सबसे अद्भुत बात मनुष्य के भीतर हम यह देखते हैं कि उसमें किसी का भय है। वह कोई भी बुरा काम करने से डरता है। उसका विवेक उसे दोषी ठहराता है और उससे कहता है कि उसे किसी को अपना लेखा देना है। वह उस अज्ञात से डरता है, उसकी अराधना करता है, उसे पूजता है। ऐसा क्यों है ? मनुष्य इतना अधिक बुद्धिमान क्यों है? उसके भीतर ये विशेषताएं कहां से आई हैं? इसका केवल एक ही उत्तर है, और वह उत्तर हमें बाइबल में मिलता है।

बाइबल कहती है, कि आरम्भ में जब परमेश्वर ने जगत की प्रत्येक वस्तु को बना दिया था, जब परमेश्वर ने आकाश में चमकने-वाली ज्योतियों को और पृथ्वी तथा जल में रहनेवाले प्रत्येक पशु-पक्षी इत्यादि को बना दिया था, तो फिर परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने के लिए मनुष्य को उत्पन्न किया, और उसने नर और नारी करके उनकी सृष्टि की। और केवल यही नहीं परन्तु एक बड़ी ही विशेष बात बाइबल में हमें यह मिलती है कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था तो उसने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार और अपनी

ही समानता पर बनाया था। (उत्पत्ति १:२६, २७)। यही कारण हैं कि मनुष्य इतना अधिक बुद्धिमान है; उसमें सोचने समझने की शक्ति है; वह अच्छाई और बुराई को देख सकता है; वह बुराई करके अपने आप में दोषी अनुभव कर सकता है। पशुओं और मनुष्यों में यही एक बहुत बड़ा और विशेष अन्तर है—और यह अन्तर इस कारण है, कि जबकि पशु जगत की अन्य नाशमान वस्तुओं के समान भौतिक हैं, मनुष्य परमेश्वर के समान आत्मिक है। क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी समानता पर बनाया था। बाइबल में परमेश्वर के सम्बन्ध में लिखा है कि परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना ४:२४)। सो क्योंकि परमेश्वर आत्मा है और जबकि मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी समानता पर बनाया है, इसलिए मनुष्य वास्तव में एक आत्मिक प्राणी है। आदम, अर्थात् सबसे पहिले मनुष्य का वर्णन करके बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने उसे भूमि की मिट्टी से रचा था और फिर उसने आदम के भीतर जीवन का श्वास फूंका था। (उत्पत्ति २:७)। परमेश्वर के जीवन का वह श्वास परमेश्वर का आत्मा था, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया था।

वे लोग जो आज ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का विकास छोटे जीव-जन्तुओं अथवा पशुओं से हुआ है वे स्वयं मनुष्य जाति का और परमेश्वर का निरादर करते हैं। क्या मनुष्य की विशेषताएं इस बात को प्रकट नहीं करती हैं कि पृथ्वी पर वह अपने आप ही बनकर नहीं आ गया है, परन्तु उसे एक महान् कारीगर ने बनाया है, और वह महान् कारीगर परमेश्वर है?

बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। यह बात परमेश्वर के वचन की पुस्तक में पशुओं के लिए नहीं लिखी गई है, परन्तु मनुष्यों के लिये लिखी

गइ है, क्योंकि मनुष्यों के समान पशुओं के भीतर सदा वर्तमान रहनेवाली आत्मा नहीं है। मनुष्यों को अपने पापों से छुटकारा पाकर अनन्त जीवन में प्रवेश करने की आवश्यकता है। इसलिए परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को मनुष्यों के पापों के लिए बलिदान कर दिया। क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि जिस मनुष्य को उसने अपने स्वरूप पर बनाया है वह पृथ्वी पर और आनेवाले जीवन में उस से हमेशा के लिये अलग और दूर होकर रहे।

बाइबल में लिखा है कि सब मनुष्य परमेश्वर का वंश है, (प्रेरितों १७:२८, २९), क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने उत्पन्न किया था। परन्तु अपने पाप तथा अधर्म के कामों के कारण सब लोग उससे अलग हैं (यशायाह ५९:१,२)। किन्तु, फिर बाइबल में हमें यह खुशी का पैग़ाम मिलता है कि यदि हम यीशु में विश्वास लाएंगे और पाप से अपना मन फिराएंगे और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो परमेश्वर हमारे सब पापों को क्षमा कर देगा और उसके साथ हमारा मेल हो जाएगा। (यहेजकेल १८:२०-२२; प्रेरितों २:३८; मरकुस १६:१६; २ कुरिन्थियों ५:१७-२१)। क्या आप परमेश्वर की बात मानकर उसके साथ अपना मेल करना न चाहेंगे? यीशु के पास आइए।

# यीशु मसीह के विषय में

क्या आप जानते हैं कि सम्पूर्ण बाइबल का मुख्य विषय यीशु मसीह है ? बाइबल में छोटी-बड़ी छियासठ पुस्तकें हैं, और इन पुस्तकों को लिखने में लगभग सोलह सौ वर्ष का समय लगा था। इस अवधि में परमेश्वर ने बाइबल की पुस्तकों को लिखने के लिये विभिन्न लोगों को प्रेरणा दी थी। इसलिये बाइबल की पुस्तकों में उन लोगों ने जो कुछ भी लिखा वह केवल वही लिखा जो परमेश्वर की इच्छा थी। यही कारण है कि उन सब लोगों ने केवल एक ही मुख्य विषय अर्थात् यीशु मसीह के बारे में बाइबल में लिखा है। बाइबल के सबसे पहिले पृष्ठ के ऊपर जहां हम परमेश्वर द्वारा जगत की सृष्टि किये जाने के सम्बन्ध में पढ़ते हैं, वहां एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि मनुष्य को बनाने से पूर्व "परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।" (उत्पत्ति १:२६)। यहां इस बात पर ध्यान दें, कि लेखक यूं नहीं कहता कि परमेश्वर ने कहा कि मैं मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाऊं, पर वह कहता है कि परमेश्वर ने कहा, कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप वा समानता पर बनाएं। अर्थात् परमेश्वर ने एक वचन के विपरीत बहुवचन का उपयोग किया, जो यह दर्शाता है कि परमेश्वरत्व में उसके साथ कोई और भी विद्यमान था। परन्तु वह कौन था ? इस बात का ज्ञान उस समय न तो उस लेखक को था और न किसी अन्य मनुष्य को। परन्तु इस बात के लिखे जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् जब बाइबल के एक अन्य लेखक ने

कलम उठाकर परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा बाइबल की एक अन्य पुस्तक को लिखना आरम्भ किया, तो उसने इस प्रकार लिखा : "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि मे परमेश्वर के साथ था...और वचन जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा।" (यूहन्ना १:१, २, १४) । सो हम देखते हैं कि आदि में परमेश्वर के साथ वचन था, और वह वचन देहधारी होकर मनुष्य बना और वह मनुष्य परमेश्वर का एकलौता पुत्र अर्थात् यीशु मसीह कहलाया।

इसी प्रकार, बाइबल की सबसे पहली पुस्तक के तीसरे अध्याय में हम मनुष्य के सबसे पहिले पाप के सम्बन्ध में पढ़ते हैं। हम वहां पढ़ते हैं कि जिस मनुष्य को परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने के लिये सबसे पहिले बनाया था, उसने शैतान के कहने में आकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ डाला था और इस प्रकार पाप करके वह परमेश्वर से अलग हो गया था। मनुष्य परमेश्वर की बनाई सृष्टि का ताज था। क्योंकि उसे उसने अपनी समानता पर तथा अपने स्वरूप पर बनाया था। परन्तु पाप के कारण मनुष्य का परमेश्वर से अलग होना निश्चित था। उस समय परमेश्वर ने शैतान से यूं कहा था, "मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उस की एड़ी को डसेगा।" (उत्पत्ति ३:१५)। इस घटना के कई शताब्दियों के बाद जब एक कन्या ने परमेश्वर की सामर्थ से बेतलेहेम में एक बालक को जन्म दिया, और जब वह बालक बड़ा होकर यीशु के नाम से प्रसिद्ध हुआ, और जब लोगों ने उसे ईर्ष्या के कारण क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मार डाला, तो उस समय परमेश्वर द्वारा शताब्दियों पूर्व कही गई यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि, मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में और तेरे वंश

और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" क्योंकि यीशु का जन्म परमेश्वर की सामर्थ से एक स्त्री के द्वारा हुआ था। और जब उसने बड़े होकर अद्भुत सामर्थ के काम किए तो कुछ लोग उस से ईर्ष्या करने लगे और शैतान ने उनको यीशु के विरुद्ध यहां तक उकसाया कि वे उसके कड़े बैरी बन गए। और उनका बैर यहां तक बढ़ गया कि उन्होंने उसे पकड़कर एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मार डाला। इस प्रकार शैतान ने यीशु की एड़ी को डसा और कुछ समय के लिये उसे सुला दिया। परन्तु परमेश्वर ने शैतान से कहा था कि, तू उस की एड़ी को तो डसेगा पर वह तेरे सिर को कुचल डालेगा। और यह कथन उस समय पूरा हुआ जब यीशु अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा था। इस प्रकार यीशु ने शैतान के सिर को कुचल डाला, अर्थात् उसने शैतान की सामर्थ वा ताकत को नाश कर दिया।

शैतान का काम है मनुष्य को परमेश्वर से अलग रखना। वह उसे परमेश्वर से अलग रखने के लिये लालच देता है, लुभाता है, उसे बुराई करने को उभारता है। परन्तु यीशु ने, बाइबल हमें बताती है, कभी कोई पाप नहीं किया। यहां तक कि जब शैतान ने उसके प्रति लोगों को उभारा था कि वे उस पर झूठे दोष लगाए और उसे क्रूस पर चढाएं, बाइबल में लिखा है कि उस समय भी यीशु उन लोगों के लिये प्रार्थना ही करता रहा। इस से हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने शैतान की प्रत्येक युक्ति तथा ताकत को कुचल डाला। इसीलिये बाइबल में यीशु को एक जगह मनुष्यों के विश्वास का कर्त्ता तथा सिद्ध करनेवाला कहकर सम्बोधित किया गया है। वहाँ लिखा है कि प्रत्येक बाधा और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर दृष्टि लगाए रहें, जिस ने उस आनन्द के

लिए जो उसके सामने रखा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। इसलिए उस पर ध्यान करो जिसने पापियों का अपने विरोध में इतना विद्रोह सह लिया कि तुम थक कर निरुत्साहित न हो जाओ।" (इब्रानियों १२:१-३)। यहां लेखक के कहने का अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार यीशु ने शैतान की युक्ति को नाकामयाब बना दिया और उस पर विजय प्राप्त की। उसी प्रकार हम भी यीशु के आदर्श का पालन करके शैतान पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पूर्ण बाइबल की पुस्तकों के दो मुख्य भाग हैं, अर्थात् पुराना नियम तथा नया नियम। जबकि पुराने नियम में परमेश्वर ने मनुष्य को यह बताया था कि मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिए यीशु जगत में आएगा। दूसरी ओर, नए नियम में परमेश्वर ने मनुष्य को यह बताया है कि यीशु जगत में आ गया है। वह मनुष्य का उनके पापों से उद्धार करने के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था। और यद्यपि यह काम मनुष्य ने अपने हाथों से किया था, तौभी बाइबल हमें यह बताती है कि यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने सब मनुष्यों पर अपने प्रेम को प्रकट किया है, क्योंकि, "जब हम पापी ही थे," बाइबल कहती है, तभी "मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियों ५:८)। मसीह के सम्बन्ध में पवित्र बाइबल का लेखक कहता है कि उसने, "परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, पर उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का स्वरूप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया।" और, "इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

(फिलिप्पियों २:६-८)। यहां से हम देखते हैं। कि यीशु के लिये क्रूस पर मरना परमेश्वर की एक आज्ञा थी। परमेश्वर ने यीशु को पृथ्वी पर इस इच्छा से भेजा था कि वह क्रूस के ऊपर मरे। और वह उसकी इच्छा का यहां तक आज्ञाकारी रहा कि उसकी मरज़ी को पूरा करने के लिए वह क्रूस पर भी चढ़ गया। परन्तु क्यों ? क्यों परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को ऐसी भयंकर मृत्यु को सहने की आज्ञा दी ? इसलिये क्योंकि हमारा परमेश्वर हम सबसे ऐसा प्रेम रखता है कि वह चाहता है कि हम में से कोई भी अपने पापों में नाश न हो, परन्तु हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। परमेश्वर की इच्छा यह कदापि नहीं है कि हम बार-बार इस पृथ्वी पर जन्म लें और बार-बार मरें। परन्तु वह यह चाहता है कि जब पृथ्वी पर हमारा यह जीवन समाप्त हो जाए तो हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा उसके साथ रहें।

इस लिये बाइबल में लिखा है, यीशु मसीह के सम्बन्ध में, कि, "उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिस से हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जावन व्यतीत करें।" (१ पतरस २:२४)। अर्थात् क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर हमें धर्मी सिद्ध करना चाहता है। परमेश्वर की दृष्टि में यीशु ने क्रूस के ऊपर हमारे पापों को उठा लिया; वह हमारे स्थान पर एक पापी की नाईं क्रूस के ऊपर मरा। इस बात में न केवल हम परमेश्वर के प्रेम को ही देखते हैं, परन्तु यहां हमें उसका अद्भुत न्याय भी दिखाई पड़ता है। उसने हमें दन्ड से बचा लिया और हमारे पापों के लिए हमारे स्थान पर अपने पुत्र को दन्डित किया। परन्तु परमेश्वर की यह शर्त है कि यीशु की मृत्यु के द्वारा अपने पापों से उद्धार पाने के लिए हम अपने पाप के लिये मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें। इसका अर्थ यह है, कि हम पाप से मन फिराएं पाप के लिये मर जाएं यह निश्चय करें कि अब अपने जीवन में हम

पाप नहीं करेंगे। और अपने उन सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें जो इस से पहले हमने किए हैं। पवित्र बाइबल मे लिखा है, कि तुम में से हर एक अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (प्रेरितों २:३८)। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बाद, स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने से पहिले, यह आज्ञा दी थी, जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह न्याय के दिन दोषी ठहराया जाएगा।

मित्रो, मेरी आशा है कि परमेश्वर के वचन की इन बातों के ऊपर आप गम्भीरता के साथ विचार करेंगे और उसकी इच्छा को स्वीकार करने का निश्चय करेंगे। यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानकारी चाहते हैं तो हमें अवश्य लिखकर सूचित करें।

# यीशु के आने के विषय में

क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि यीशु को इस पृथ्वी पर आने की क्या आवश्यकता थी ? बाइबल हमें उसके बारे में बताती है कि वह आदि में परमेश्वर के साथ था; वह जगत की उत्पत्ति से पहिले स्वर्ग में परमेश्वर के साथ विद्यमान था। और बाइबल कहती है, कि सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, और वह परमेश्वर था। जैसा कि लिखा है "आदि मे वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" (यूहन्ना १:१) फिर क्यों वह वचन स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था? प्रत्यक्ष ही है, कि इस बात का उत्तर हम यह कहकर देंगे कि वह पृथ्वी पर मनुष्यों का उनके पापों से उद्धार करने के लिए आया था। परन्तु क्या परमेश्वर महान नहीं है? क्या वह सर्वशक्तिमान नहीं है ? क्या उसमें ऐसी सामर्थ नहीं है कि वह मनुष्यों का उद्धार स्वर्ग में ही रहकर कर सके? निसंदेह, वह अवश्य ऐसा कर सकता है। वह चाहता तो मनुष्यों को स्वर्ग से ही कुछ आज्ञाएं दे देता, और उनसे कहता कि यदि तुम इन आज्ञाओं को मानोगे तो मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा। पर उसने अपने वचन को देहधारी बनाकर मनुष्यों के बीच में रहने के लिए भेज दिया। वह, स्वयं, यीशु मसीह में होकर, पृथ्वी पर रहने के लिये आ गया। परन्तु क्यों ?

इसलिए, ताकि मनुष्य का परिचय परमेश्वर से हो जाए। यीशु के इस पृथ्वी पर आने से पहले मनुष्य परमेश्वर की अराधना करता

था, उसके वचन को पढ़ता था, परन्तु वह उस से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं था। उसने सुना था कि परमेश्वर प्रेम है, परन्तु उसके प्रेम को प्रकट में अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था। उसने पढ़ा था कि परमेश्वर क्षमा करता है, परन्तु उसकी क्षमा को कभी अनुभव नहीं किया था। उस से कहा गया था कि परमेश्वर पवित्र तथा धर्मी है, परन्तु उसने उसकी पवित्रता तथा धार्मिकता को कभी देखा नहीं था। पर जब यीशु इस जगत में आया तो लोगों ने जाना कि परमेश्वर वास्तव में कौन है। यद्यपि वह एक मनुष्य था, परन्तु तौभी वह मनुष्यों से भिन्न था। पृथ्वी पर आज तक कभी कोई ऐसा मनुष्य नहीं हुआ है जिसने कभी कोई पाप न किया हो; यहाँ तक कि जिन मनुष्यों को आज लोग भगवान करके पूजते हैं उनके जीवन में भी कहीं न कहीं कोई पाप विद्यमान था। परन्तु यीशु के बारे में बाइबल में हम ये शब्द पढ़ते हैं: "उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दीं, पर अपने आप को उसके हाथ में सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है।" (१ पतरस २:२२, २३)। फिर हम देखते हैं कि यीशु का जीवन एक स्वार्थ रहित जीवन था, अर्थात् उसने जीवन को अपने लिए नहीं परन्तु औरों के लिए व्यतीत किया था। उसने कभी अपनी भूख की या अपने शरीर की चिन्ता नहीं की, परन्तु अन्य लोगों को भूखा देखकर उन पर तरस आ गया और उसने उन्हें भोजन खिलाया। उसने कभी किसी बीमार को बिना चंगा किए अपने पास से वापस नहीं भेजा। उसने किसी से भी कभी कोई बदला नहीं लिया। एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि जब ईर्ष्या के कारण कुछ लोग उसे पकड़ने के लिए आए थे तो यीशु के एक चेले ने क्रोध में आकर उन में से एक का कान उड़ा दिया था अर्थात् उसका कान काट दिया था। इस पर लिखा है, कि यीशु ने अपने उस चेले को डांटा और तुरन्त हाथ बढ़ाकर उस व्यक्ति का कान ठीक

कर दिया, और फिर अपने आप को उसने उन लोगों के हवाले कर दिया। मान लीजिए वहां यीशु के स्थान पर कोई और व्यक्ति होता तो वह क्या करता ? मान लीजिए यदि उस मनुष्य के पास वैसी ही शक्ति होती जैसी यीशु के पास थी तो वह क्या करता? निश्चय हा वह उन लोगों को अन्धा कर देता या हो सकता है उन्हें अपने चमत्कार से कोई दन्ड देता। परन्तु जो काम यीशु ने किया वह कोई मनुष्य नहीं कर सकता था। किन्तु फिर हम पढ़ते हैं, कि वे लोग यीशु को मारते पीटते हुए गुलगुथा नाम के एक स्थान पर ले गए। और वहां उन्होंने उसे लकड़ी के दो फट्टों पर कीलों के साथ ठोंक दिया, और उस लकड़ी को खड़ा करके जब वे उसके मरने की प्रतीक्षा कर रहे थे तो वे सब उसका मज़ाक और हँसी वा ठट्ठा उड़ा रहे थे। परन्तु हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं कि वह अपने स्वर्गीय पिता से बार-बार निवेदन करके कह रहा था, कि हे पिता तू इन्हे क्षमा कर दे, क्योंकि ये लोग जानते नहीं हैं कि ये वास्तव में क्या कर रहे हैं। क्या किसी मनुष्य से ऐसी आशा की जा सकती है ?

अपनी मृत्यु से पूर्व एक बार यीशु ने अपने चेलों से यूं कहा था, "तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से स्थान हैं। यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा। के जहां मैं रहूं, वहां तुम भा रहो, और जहां मैं जा रहा हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।" यीशु की यह बात सुनकर थोमा नाम के उसके एक चेले ने उससे कहा था, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जा रहा है, तो मार्ग कैसे जानें?" इस पर यीशु ने उस से कहा, "मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यदि तुमने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जानते। और अब से उसे जानते

हो और उसे देखा भी है।" यह सुन फिलिप्पुस नाम के एक अन्य चेले ने उस से कहा, हे, "प्रभु पिता को हमें दिखा दे; और यही हमारे लिए पर्याप्त है।" यीशु ने उससे कहा, "फिलिप्पुस, मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूं, फिर भी तू मुझे नहीं जानता ? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है। तू कैसे कहता है, 'पिता को हमें दिखा दे ?' क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है जो वचन मैं तुम से कहता हूं वह अपनी और से नहीं कहता, परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही अपने कार्य करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है अन्यथा कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।" (यूहन्ना १४:१-११)।

यहां हम इस बात को देखते है, कि यीशु ने स्पष्ट शब्दों में इस बात की पुष्टि की थी कि वह और पिता एक है, अर्थात् वे दोनों ही परमेश्वर है। उस ने कहा कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है। और नहीं तो मेरे कामों के ही कारण, यीशु ने कहा, यह विश्वास करो कि मैं वही हूं। न केवल यीशु ने एक उत्तम जीवन ही व्यतीत किया था परन्तु उसने बड़े बड़े सामर्थ के काम भी किए थे। जो इस बात को प्रमाणित करते थे कि वह केवल एक मनुष्य ही नहीं परन्तु मनुष्य के रूप में परमेश्वर है। जो अपने आप को मनुष्यों पर प्रकट करने के लिए यीशु में होकर पृथ्वी पर आया है।

इसी प्रकार, यीशु के इस पृथ्वी पर आने के सम्बन्ध में हमारा ध्यान एक और बड़ी खास बात के ऊपर जाता है। और वह खास बात यह है कि यदि यीशु इस जगत में नहीं आता तो हम अपनी आत्मा के महत्व को और उसके उद्धार के महत्व को नहीं पहचान पाते। उसने मनुष्यों को सिखाया था कि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करले और अपनी आत्मा को खो दे तो उसे कोई लाभ नहीं होगा; क्योंकि शरीर तो नाशमान् है परन्तु आत्मा अमर है। (मरकुस ८:३५-३७)। और मनुष्य की आत्मा को नरक के दन्ड से बचाने के लिए उसने स्वयं

अपने पवित्र जीवन को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया था। बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं कि "तुम्हारा छुटकारा सोने या चांदी जैसी नाशमान् वस्तुओं से नहींपरन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ हैं।" (१ पतरस १:१८, १९)। उद्धार पाने का अर्थ है छुटकारा पाना, अर्थात् अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना। और बाइबल कहती है कि तुम्हारा छुटकारा यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा होता है। यह कितनी महान् बात है! जगत में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिस के द्वारा मनुष्य अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। इसलिये परमेश्वर यीशु में होकर मनुष्य का छुटकारा करने के लिए जगत में आ गया था। क्योंकिउसने चाहा कि मनुष्य इस बात से भली-भांति परिचित हो जाए कि उसकी आत्मा के सिवाए जगत में और कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो परमेश्वर के निकट महत्वपूर्ण है। और इस बात को मनुष्यों को सिखाने के लिए परमेश्वर ने होने दिया कि यीशु क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाए; वह जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए मारा जाए; और जगत के पापियों के छुटकारे के लिए उसका लोहू बहे। परन्तु यदि यीशु जगत में आकर पापियों के छुटकारे के लिये अपने आप को बलिदान नहीं करता, तो मनुष्य यह बात किस प्रकार जान पाता कि उस की आत्मा मूल्यवान है और उसका छुटकारा बड़ा ही कीमती है?

सो इन बातों को देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है, कि यीशु का इस जगत में आना इसलिये आवश्यक हुंआ कि उसके आने से मनुष्य परमेश्वर से और अपनी आत्मा के छुटकारे के महत्व से परिचित हो जाए। परन्तु जो मनुष्य यीशु में विश्वास नहीं लाता और उसकी आज्ञा को नहीं मानता है, उसके लिये यीशु का इस जगत में आना कोई महत्व नहीं रखता, और न ही यीशु के आने से उसे कोई लाभ होगा। क्योंकि यीशु की आज्ञा यह है कि जो मनुष्य मुझ में विश्वास करेगा और पाप से अपना मन फिराएगा और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा केवल उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं लाएगा

वह न्याय के दिन अपने पापों के कारण दोषी ठहरेगा। (मरकुस १६:१६; लूका १३:५; प्रेरितों २:३८)।

क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? क्या आप उसमें विश्वास लाने को तैयार हैं? उसकी आज्ञा को मानिये वह आप का उद्धार करेगा। उसने कहा था, कि मैं खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने को आया हूं (लूका १९:१०)। वह आपका उद्धार करने को तैयार है। क्या आप उसके पास आने को तैयार हैं?

# यीशु के पुनरागमन के विषय में

बाइबल की एक बड़ी ही महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि यीशु एक बार फिर आएगा। परन्तु बाइबल बड़े ही स्पष्ट शब्दों में हमें यह बताती है कि इस बार यीशु का आना बिल्कुल भिन्न होगा। अर्थात् न तो वह अब उस तरह से पृथ्वी पर आएगा जैसे कि वह पहिली बार आया था, और न ही उस उद्देश्य से वह फिर आएगा जिस उद्देश्य से वह पहिली बार आया था। जब यीशु पहिली बार जगत में आया था। तो वह मनुष्यों की तरह एक स्त्री से जन्म लेकर आया था। उसने पृथ्वी पर जन्म लिया था। और उसके आने से पूर्व अनेक भविष्यद्वक्ताओं ने उसके आने का समाचार दिया था। परन्तु, बाइबल की शिक्षानुसार अबकी बार यीशु जब आएगा तो वह एक बालक की नाईं जन्म लेकर नहीं आएगा, और न ही वह अब इस पृथ्वी पर आएगा, और इसी प्रकार, किसी को भी उसके आने से पूर्व कोई सूचना नहीं मिलेगी। परन्तु वह ऊपर हवा में अर्थात् वातावरण में प्रगट होगा। परन्तु इससे पहले कि हम बाइबल में से इस विषय पर पढ़ें कि यीशु किस प्रकार आएगा। मेरे विचार में हमारे लिये यह जानना और भी अधिक आवश्यक है कि यीशु दोबारा क्यों आएगा ? जब वह पहिली बार आया था, तो उस समय वह परमेश्वर तथा उसके प्रेम को प्रकट करने के लिये आया था, तब वह मनुष्य का उद्धार करने को आया था; और उसे नरक में जाने से बचाने के लिए आया था। तब वह जगत के पापों के लिए अपने आप को बलिदान करके मनुष्य को यह सिखाने के

लिये आया था कि उसका छुटकारा बड़ा ही कीमती है और उसकी आत्मा का उद्धार बड़ा ही महत्वपूर्ण है। परन्तु यीशु के दूसरी बार प्रकट होने के सम्बन्ध में बाइबल यूं कहती है: "कि अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चात्ताप करें। क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृत्कों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

सो बाइबल के इस कथन से हम यह सीखते हैं कि यीशु के दोबारा प्रकट होने का कारण यह होगा कि परमेश्वर उसके द्वारा सारे जगत का न्याय करेगा। परमेश्वर ने न्याय का एक दिन ठहराया है और उसने यीशु को न्याय करने के लिये नियुक्त किया है। जब यीशु स्वयं इस पृथ्वी पर था तो उसने न्याय के दिन के विषय में लोगों को अनेक दृष्टांत दिये थे। इन दृष्टांतों के द्वारा यीशु ने लोगों के ऊपर न्याय के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण बातों को प्रकट किया था। उन्हीं में से एक दृष्टांत में यीशु ने इस प्रकार कहा था: "पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सम्मुख एकत्रित की जाएंगी; और वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, तथा बकरियों को बाईं ओर करेगा। तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी बनो जो जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं परदेशी था, और तुमने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए

बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली; बन्दिगृह में था तुम मुझ से मिलने आए। तब धर्मी उसे उत्तर देंगे, प्रभु हमने तुझे कब भूखा देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया ? और हमने कब तुझे परदेसी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए ? हमने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए ? इस पर राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कुछ तुम ने मेरे इन छोटे से छोटे भाईयों में से किसी भी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। तब वह बाएं हाथवालों से कहेगा, हे शापित लोगों, मुझ से दूर होकर उस अनन्त अग्नि में जा पड़ो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। क्योंयि मैं भूखा था, तुमने मुझे कुछ खाने को नहीं दिया; पियासा था तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; परदेशी था तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; नंगा था, तुमने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, तुम मेरी सुधि लेने नहीं आए। इस पर वे उससे पूछेंगे, प्रभु, हमने कब तुझे भूखा या प्यासा, या परदेशी या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा न की ? तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि जो तुमने इन छोटों से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। ये लोग अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५:३१-४६)।

यहां यीशु ने इस दृष्टांत मे विशेष रूप से इस बात को प्रकट किया है कि जब वह न्याय करने के लिए प्रकट होगा तो उस समय उसके सामने पृथ्वी के सारे लोग खड़े होंगे। और जबकि कुछ लोग उसके न्यायानुसार नरक में अनन्त दन्ड पाने के लिये प्रवेश करेंगे, दूसरी ओर कुछ अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। इसी सम्बन्ध में एक अन्य जगह यीशु ने यह भी कहा था कि "जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५:२९)। यानि आदम से लेकर मसीह के आने तक

जितने भी मनुष्यों ने पृथ्वी पर जन्म लिया है उस दिन उन सब का न्याय किया जाएगा। और जितनों ने अपने जीवनों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत किया है, वे अनन्त जीवन पाने के लिये मसीह के साथ स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। परन्तु जिन्होंने अपने जीवनों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत नहीं किया है, वे अनन्त दन्ड भोगने के लिए नरक में प्रवेश करेंगे।

जब यीशु पहिली बार जगत में आया था तो वह इस उद्देश्य से आया था कि जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये वह अपने पवित्र जीवन को बलिदान कर दे। और जब उसने इस कार्य को पूरा कर दिया तो मृतकों में से जी उठकर और स्वर्ग में वापिस जाने से पहले उसने अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी कि उद्धार के इस सुसमाचार का प्रचार सब जगह जाकर करो, और जब लोग इस सुसमाचार में विश्वास लाएं तो उन्हें आज्ञा दो कि वे पाप से अपना मन फ़िराएं और अपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (मत्ती २८:१८-२०; लूका २४: ४६-४७)। यीशु की आज्ञानुसार शताब्दियों से इन बातों का प्रचार पृथ्वी पर किया जा रहा है और उस समय तक होता रहेगा जब तक कि यीशु फिर प्रकट न होगा।

परन्तु, अब हम इस बात को देखेंगे, कि यीशु का आना किस प्रकार होगा ? प्रेरित पौलुस इस सम्बन्ध में बाइबल में लिखकर एक जगह इस प्रकार कहता है, "क्योंकि प्रभु स्वयं···स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उनके साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिये बादलों पर उठा लिये जाएंगे। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे।" परन्तु, "इस बात की आवश्यकता नहीं कि समयों या कालों के विषय में तुम्हें कुछ लिखा जाए क्योंकि तुम स्वयं भली-भाँति जानते हो कि जैसे रात्रि में चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन भी आएगा।" (१ थिस्सलुनीकियों ४:१६, १७; ५:१,२)। अर्थात् प्रभु यीशु किसी भी दिन, बिना किसी सूचना के,

अचानक और एकाएक आ जाएगा और इस बात के ऊपर भी ग़ौर कर कि प्रेरित कहता है, कि यीशु के आने पर प्रभु के लोग उस से मिलने के लिये ऊपर हवा में, बादलों पर उठा लिये जाएंगे। यानि यीशु अबकी बार जब प्रकट होगा तो क्योंकि वह पृथ्वी पर नहीं आएगा क्योंकि अब उसे पृथ्बी पर आने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह पृथ्वी पर एक बार आ चुका है, और जिस काम को उसे पृथ्वी पर करना था उसे वह पूरा कर चुका है। अब यह मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उसके सुसमाचार पर विश्वास लाए और उसकी इच्छानुसार जीवन को व्यतीत करे। यीशु दोबारा आएगा, उद्धार करने के लिए नहीं परन्तु न्याय करने के लिए आएगा।

इसी सम्बन्ध में प्रेरित पतरस बाइबल में लिखकर इस प्रकार कहता है : "परन्तु उसके वचन के द्वारा वर्तमान आकाश और पृथ्वी भस्म किए जाने के लिए रखे गए हैं और ये अधर्मी लोगों के न्याय और विनाश के दिन तक ऐसे ही रखे जाएंगे ···परन्तु प्रभु का दिन चोर के सदृश आएगा जिसमें आकाश बड़ी गर्जन क साथ लुप्त हो जाएगा और तत्व प्रचन्ड ताप से नष्ट हो जाएंगे और पृथ्वी तथा उस पर किए गए कार्य भस्म हो जाएंगे। सो जबकि ये सब वस्तुएं इस प्रकार नाश होने पर है तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में किस प्रकार के लोग होना चाहिए। तुम्हें परमेश्वर के दिन को शीघ्र लाने के लिए किस प्रकार प्रयत्नशील रहना चाहिए! उस दिन के कारण आकाश जलकर नष्ट हो जाएगा और तत्व प्रचन्ड ताप से पिघल जाएंगे। परन्तु उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की राह देख रहे हैं जिसमें धार्मिकता वास करती है।" (२ पतरस ३:७, १०-१३)।

इस वर्णन में बाइबल का लेखक हमारा ध्यान इस खास बात के ऊपर दिला रहा है कि वर्तमान आकाश तथा पृथ्वी केवल न्याय के दिन तक के लिए ही वर्तमान हैं अर्थात् उस दिन तक के लिये जिस दिन यीशु प्रकट होगा। परन्तु प्रभु यीशु के आने पर इनका कोई प्रयोजन नहीं रहेगा,

इसलिए ये समाप्त हो जाएंगे। लेकिन प्रभु के लोग उसके साथ एक नए आकाश तथा नई पृथ्वी अर्थात् उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे जहां धार्मिकता वास करती है।

क्या आप उस दिन स्वर्ग मे प्रवेश पाने के लिए तैयार पाए जाएंगे जिस दिन प्रभु यीशु स्वर्ग से प्रकट होगा ? वह आपका उद्धार करना चाहता है; वह आप को स्वर्ग में ले जाना चाहता है। क्या आप उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? क्या आप उसके आने के लिए तैयार है? वह चाहता है कि आप उस में विश्वास लाएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर एक पवित्र जीवन व्यतीत करें। ताकि उसके आने पर उस से मिलने के लिए आप तैयार पाए जाएं।

प्रभु अपने पास आने के लिये आप को शक्ति दे, यह मेरी उससे प्रार्थना है और मेरी आशा है कि आप उस से मिलने के लिए अपने आप को अवश्य ही तैयार करेंगे।

# जीवन के विषय में

पृथ्वी पर मनुष्य के निकट सभी वस्तुओं से अधिक महत्वपूर्ण वस्तु स्वयं उसका जीवन है। अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए और उसे दुख वा तकलीफ़ से बचाए रखने के लिये मनुष्य सब कुछ करता है। मनुष्य को सबसे अधिक प्रेम स्वयं अपने ही जीवन से है। जीवनका महत्व मनुष्य के निकट बहुत ही बड़ा है। परन्तु जीवन क्या है? इस थोड़े से समय में मैं आप का ध्यान इसी खास बात के ऊपर दिलाना चाहता हूं कि जीवन के विषय में बाइबल हमें क्या सिखाती है।

यद्यपि कि आज हमारे स्कूलों में हर जगह यह सिखाया जा रहा है कि मनुष्य का विकास कीटाणुओं से हुआ है। तौभी बाइबल हमें यह सिखाती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया है। वास्तव में बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर ने ही सम्पूर्ण जगत की सृष्टि की है। बाइबल के अनुसार परमेश्वर ने संसार को अपने वचन के द्वारा या वचन की सामर्थ से उत्पन्न किया है। परन्तु मनुष्य की सृष्टि के सम्बन्ध में बाइबल कहती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने एक विशेष रूप से बनाया है। मनुष्य के अतिरिक्त जगत में जितनी भी वस्तुएं वर्तमान हैं, बाइबल कहती है, कि वे सब की सब एक दिन नाश हो जाएंगी। परन्तु मनुष्य के विषय में लिखा है कि वह सर्वदा बना रहेगा। क्योंकि उसे परमेश्वर ने जगत की अन्य वस्तुओं के समान केवल भौतिक नहीं बनाया है, किन्तु मनुष्य को परमेश्वर ने स्वयं अपने ही स्वरूप के अनुसार तथा अपनी समानता में बनाया था।

मनुष्य के जीवन को बाइबल में तीन प्रकार से दर्शाया गया है। अर्थात्एक है तो है शारीरिक जीवन, और दूसरा है आत्मिक जीवनऔर अनन्ततीसरा जीवन। शारीरिक जीवन का तात्पर्य मनुष्य के शरीर से है। बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य के शरीर को आदि में परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी मे बनाया था। और जब मनुष्य ने पाप करके अपना सम्बन्ध परमेश्वर मे तोड़ लिया था, तो परमेश्वर ने मनुष्य मे कहा था कि तू मिट्टी में से निकाला गया था और फिर मिट्टी ही में मिल जाएगा। (उत्पत्ति २:१९)। इसलिए मनुष्य का शारीरिक जीवन भौतिक है, अर्थात् नाशमान् है। इसी जीवन को सम्बोधित करके बाइबल का लेखक एक जगह कहता है : "तुम जो यह कहते हो, आओ हम आज या कल अमुक नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। फिर भी यह नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या होगा। तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है और फिर अदृश हो जाती है।" (याकूब ४:१३, १४)। सो मनुष्य का शारीरिक जीवन सीमित है, छोटा है, और वह कभी भी समाप्त हो सकता है, और एक दिन निश्चय ही समाप्त हो जाएगा।

परन्तु एक ओर जबकि हम देखते हैं कि मनुष्य का शारीरिक जीवन एक दिन अवश्य ही समाप्त हो जाएगा। दूसरी ओर हम यप देखते हैं कि मनुष्य का आत्मिक जीवन कभी भी समाप्त नहीं होगा। मनुष्य की शारीरिक मृत्यु को सम्बोधित करके बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२:७)। मनुष्य का शरीर मिट्टी का है इसलिये वह मिट्टी में मिल जाएगा। परन्तु आत्मा की प्राप्ति मनुष्य को परमेश्वर से हुई है, इस कारण, शरीर के नाश हो जाने पर आत्मा परमेश्वर के पास ही वापस लौट जाएगी। जब परमेश्वर ने मनुष्य को आदि में बनाया था तो उसने मनुष्य की देह को मिट्टी में से बनाया था, जैसा कि अभी हम ने

बाइबल में से देखा है। लेकिन फिर हम देखते हैं, बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य को भूमि की मिट्टी से बनाने के बाद, परमेश्वर ने उसके भीतर अपना श्वास फूंक दिया था। (उत्पत्ति २:७) परमेश्वर में जीवन है, परन्तु उसका जीवन मनुष्य के जीवन की तरह भौतिक नहीं है। परमेश्वर के विषय में प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, कि "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना ४:२४)। सो परमेश्वर का जीवन हमारी तरह भौतिक नहीं परन्तु आत्मिक है, और उसी आत्मिक जीवन को आदि में परमेश्वर ने मनुष्य के भीतर डाला था। पशुओं के जीवन तथा मनुष्यों के जीवन में यही एक विशेष अन्तर है। पशुओं का जीवन केवल भौतिक है लेकिन मनुष्यों का जीवन भौतिक भी है और आत्मिक भी है। शारिरिक दृष्टिकोण से जबकि वे दोनों ही नाशमान हैं, अर्थात् उनके शरीर मिट्टी में मिल जाते हैं। परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से, क्योंकि मनुष्य के भीतर आत्मा है, इसलिये मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से अलग होकर विद्यमान रहती है। यानि आत्मिक दृष्टिकोण से मनुष्य कभी नहीं मरता है, परन्तु हमेशा विद्यमान रहता है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि आदि में सृष्टि के समय "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरुप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।" (उत्पत्ति १:२७)। सो क्योंकि परमेश्वर का स्वरुप आत्मा है, और जबकि उसने मनुष्य को अपने ही स्वरुप पर उत्पन्न किया था, इसलिये प्रत्यक्ष ही है कि मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। आत्मा मनुष्य का वह भाग है जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के ही समान सदैव वर्तमान रहेगी। सो जबकि मनुष्य का शरीरिक जीवन नाशमान है, दूसरी ओर, उसका आत्मिक जीवन अमर या अविनाश है। क्योंकि मनुष्य की आत्मा का कभी अन्त नहीं होगा।

लेकिन, फिर बाइबल हमें एक और जीवन के बारे में भी बताती

है, उस जीवन का वर्णन करके बाइबल इस प्रकार कहती है "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। परन्तु अनन्त जीवन क्या है ? बाइबल के अनुसार, अनन्त जीवन का अर्थ है हमेशा परमेश्वर के साथ रहना। यद्यपि मनुष्य की आत्मा का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा, परन्तु पाप के कारण मनुष्य की आत्मा मरी हुई है। मृत्यु का अर्थ केवल समाप्म हो जाना या मिट जाना ही नहीं है, परन्तु वास्तव में मृत्यु का अर्थ है अलग हो जाना। प्राण या आत्मा का शरीर से अलग हो जाना शारीरिक मृत्यु को उत्पन्न करता है, और ऐसे ही आत्मा का परमेश्वर से अलग हो जाना आत्मिक मृत्यु को उत्पन्न करता है। मनुष्यों को सम्बोधित करके पवित्र बाइबल कहती है: "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।" (यशायाह ५९:२)। मनुष्य स्वयं अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग है और इस कारण वह आत्मिक दृष्टिकोण से मरा हुआ है, क्योंकि उसकी आत्मा का सम्बन्ध परमेश्वर से नहीं है। इसलिये यद्यपि मनुष्य की आत्मा शारीरिक मृत्यु के बाद भी विद्यमान तो रहेगी, परन्तु क्योंकि पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है, इसयिये जहाँ वह वर्तमान रहेगी वहाँ वह परमेश्वर से अलग रहकर ही वर्तमान होगी। इसीलिये अभी हमने बाइबल में यूं पढ़ा था कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" अर्थात पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है। किन्तु इसके आगे बाइबल में यूँ लिखा है, "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" यानि मनुष्य पाप के कारण तो आत्मिक दृष्टिकोण से मरा हुआ है, परन्तु परमेश्वर का वरदान प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है। अर्थात्, यदि मनुष्य चाहे तो वह प्रभु यीशु मसीह के पास आकर, उसमें होकर परमेश्वर के अनन्त जीवन के बरदान को प्राप्त कर सकता है। अब इस का अर्थ क्या है ?

बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को जगत में सब मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। यीशु का जीवन पापरहित था। उसके जीवन में कोई भी पाप नहीं था। परन्तु परमेश्वर ने अपने अद्भुत ज्ञान तथा पहिले से ठहराई हुई मनसा से उसे एक पापी की नाईं क्रूस के ऊपर बलिदान करवाया था। बाइबल में लिखा है कि यीशु हम सब के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था, यीशु की मृत्यु में परमेश्वर ने जगत पर अपने अनुग्रह को प्रकट किया था। इसीलिए बाइबल में लिखा है कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)।

मनुष्य अपने शारीरिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिये भोजन खाता है और व्यायाम करता है, तथा अपने आत्मिक जीवन को बनाए रखने के लिए वह आराधना करता है तथा धर्म के काम करता है। परन्तु जिस जीवन की आवश्यकता मनुष्य को वास्तव में है वह जीवन अनन्त जीवन है। क्योंकि शारीरिक जीवन नाशमान है, और आत्मिक जीवन अनन्त जीवन के बिना मरा हुआ है। "परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" क्या आप के पास अनन्त जीवन है ?

यदि आप अपने सारे मन से प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाएंगे, और पाप से मन फिराकर, अपने सब पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेंगे, अर्थात् यीशु की आज्ञा मानकर अपने वर्तमान मनुष्य को जल-रूपी-कब्र के भीतर गाड़ देंगे, (रोमियों ६:३-५) तो परमेश्वर ने बाइबल में यह प्रतिज्ञा की है कि वह आपके सब पापों से आपका उद्धार करेगा और आप को अनन्त जीवन देगा। (प्रेरितों २:३८; गलतियों ३:२७)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की आज्ञा को मानकर आज आप उस अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकते हैं। जो उसके अनुग्रह

से हम सब को प्रभु यीशु मसीह में मिलता है। शारीरिक जीवन अच्छा है और आत्मिक जीवन भी अच्छा है, क्योंकि ये दोनों ही मनुष्य को परमेश्वर से प्राप्त हुए हैं। परन्तु जिस मनुष्य के पास अनन्त जीवन नहीं है उसका जीवन व्यर्थ है, क्योंकि ऐसे मनुष्य को अपने जीवन से अन्त में कोई भी लाभ न होगा।

सो मेरी आशा है कि इन बातों को सुनकर आज आप अपने जीवन को जांचेंगे ओर उस अनन्त जीवन को प्राप्त करने का निश्चय करेंगे जिसे परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह में देने की प्रतिज्ञा की है।

# मृत्यु के विषय में

आज हम अपने बाइबल अध्ययन में इस बारे में देखेंगें कि बाइबल मृत्यु के विषय में हमें क्या सिखाती है। मृत्यु एक वास्तविकता है, यह एक सच्चाई है। जहाँ जीवन है वहां मृत्यु भी अवश्य है। मृत्यु किसी का पक्षपात नहीं करती। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी मरते हैं। पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है कि "मनुष्यों के लिये एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है।" (इब्रानियों ९:२७)। मनुष्य मरने के बाद फिर जन्म लेकर नहीं मरता। परन्तु वह केवल एक ही बार मरता है। परन्तु मृत्यु क्या है?

जिस प्रकार से बाइबल में जीवन को तीन तरह से दर्शाया गया है,वैसे ही मृत्यु को भी बाइबल में तीन अलग-अलग दष्टिकोण से रखा गया है। जीवन के विषय में बाइबल हमें बताती है, कि मनुष्य का एक शारीरिक जीवन है, और दूसरा आत्मिक जीवन है, और तीसरा अनन्त जीवन है। ऐसे ही बाइबल में हमें मृत्यु के बारे में भी मिलता है। बाइबल में लिखा है कि एक तो शारीरिक मृत्यु है और दूसरी आत्मिक मृत्यु है, तथा तीसरी अनन्त मृत्यु है।

शारीरिक मृत्यु का सम्बन्ध मनुष्य की देह से है। यह मृत्यु उस समय होती है जब मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से अलग हो जाती है। बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते: "जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब २:२६)। सो जब आत्मा देह से अलग हो जाती तो है उसका परिणाम शारीरिक

मृत्यु होता है। यह मृत्यु विश्वव्यापी है, हर एक के लिये है, इस मृत्यु का सामना सब को करना पड़ेगा। क्योंकि इसे परमेश्वर ने उन सब के लिये नियुक्त किया है जो जीवित हैं। शारीरिक मृत्यु न केवल अधर्मियों के लिये ही नियुक्त है परन्तु धर्मियों के लिये भी है; न केवल वे ही लोग इस मृत्यु का शिकार होते हैं जो पाप करने के योग्य हैं परन्तु वे छोटे-छोटे नन्हे मासूम बच्चे भी इस मृत्यु का शिकार बनते हैं जिन्होंने कोई पाप नहीं किया है।

परन्तु जबकि शारीरिक मृत्यु बिना पक्षपात के सब के लिये नियुक्त है। आत्मिक मृत्यु एक ऐसी मृत्यु है जो मनुष्य को पाप के कारण ही मिलती है। अर्थात् आत्मिक मृत्यु का सामना केवल वही लोग करते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में स्वयं अपना लेखा देने के योग्य हैं। परन्तु आत्मिक मृत्यु से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि इसके द्वारा आत्मा का अस्तित्व ही मिट जाता है। किन्तु इसका अर्थ है मनुष्य की आत्मा का परमेश्वर अर्थात् अत्मिक जीवन के स्त्रोत से अलग हो जाना। इस मृत्यु का सबसे पहला उदाहरण बाइबल में हमें आदम तथा हवा के बारे में मिलता है। आदम और हव्वा वे मनुष्य थे जिन्हें परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने के लिये सबसे पहले आश्चर्यक्रम के द्वारा बनाया था। उस समय परमेश्वर ने उन्हें एक ऐसे स्थान पर रखा था जहां उन्हें शरीरिक तथा आत्मिक दोनों ही प्रकार की आशीषें प्राप्त थीं। वहां उन्हें न तो कोई भय था और न किसी वस्तु की कोई घटी थी, और सबसे बड़ा बात यह थी, कि वहां उन्हें परमेश्वर की संगति प्राप्त थी। परन्तु क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर तथा अपनी ही समानता पर उत्पन्न किया था, इस कारण वह परमेश्वर के ही समान स्वतन्त्र था। अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को बांधकर नहीं रखा था, परन्तु उसे सब प्रकार की स्वतंत्रता दी थी। किन्तु आदम तथा हव्वा से परमेश्वर ने कहा था, कि जिस दिन तुम मेरा नियम तोड़ोगे उसी दिन तुम मर जाओगे और बाइबल में आगे हम पढ़ते हैं

कि कुछ ही समय पश्चात् मनुष्य ने अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करके वास्तव में परमेश्वर के नियम को तोड़ दिया। और इसी के साथ परमेश्वर की वह प्रतिज्ञा भी पूरी हुई जिसे करके परमेश्वर ने मनुष्य से कहा था कि "जिस दिन तू मेरा नियम तोड़ेगा उसी दिन तू अवश्य मर जाएगा।" परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी संगति से निकाल दिला और मनुष्य आत्मिक रूप से मर गया।

बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा है: "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषाओं द्वारा खिचकर व फंसकर परीक्षा मे पड़ता है। जब अभिलाषा गर्भवती होती हैं तो पाप को जनती है, और जब पाप हो जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४, १५)। अर्थात् आत्मिक मृत्यु का ज़िम्मेदार प्रत्येक मनुष्य का अपना ही पाप है। पवित्र बाइबल के कथनानुसार, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का, धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल १८:२०)। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर यूं लिखा है, "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५९:२)। यद्यपि आदम के पाप के परिणामस्वरूप शारीरिक मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई थी, किन्तु आत्मिक मृत्यु का कारण है प्रत्येक मनुष्य के स्वयं अपने ही पाप। और बाइबल में यह भी लिखा है, कि सबने पाप किया है और सब, इस कारण, परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)। अर्थात् पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य जो परमेश्वर को अपना लेखा देने के योग्य है, आत्मिक दृष्टिकोण मे मरा हुआ है।

परन्तु आत्मिक मृत्यु का अर्थ अनन्त मृत्यु नहीं है। क्योंकि आत्मिक मृत्यु तथा अनन्त मृत्यु में एक बहुत बड़ा अन्तर है। जबकि आत्मिक मृत्यु के कारण प्रत्येक मनुष्य अपने ही पापों में मरा हुआ है, अर्थात्

परमेश्वर से अलग है, परन्तु बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर की सामर्थ से हम इस मृत्यु से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। दूसरी ओर, अनन्त मृत्यु वह मृत्यु है जिस से कभी कोई मनुष्य छुटकारा नहीं पा सकता, क्योंकि वह अनन्त है। परन्तु अनन्त मृत्यु से बचने के लिए आत्मिक मृत्यु से बचना आवश्यक है, क्योंकि आत्मिक मृत्यु ही मनुष्य को अनन्त मृत्यु की और ले जाती है। जिस प्रकार आत्मिक मृत्यु का तात्पर्य परमेश्वर से अलग होना है, वैसे ही अनन्त मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग होजाना। परन्तु अनन्त मृत्यु का सम्बन्ध इस जगत से नहीं है। क्योंकि मनुष्य जब तक इस जगत में है उसके पास यह अवसर है कि वह अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके आत्मिक मृत्यु से बच जाए। और क्योंकि आत्मिक मृत्यु ही अनन्त मृत्यु का कारण है इस लिये जो इन्सान आत्मिक मृत्यु से बच जाएगा। वह अनन्त मृत्यु से भी बच जाएगा। प्रभु यीशु ने एक जगह इस प्रकार कहा था, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना ५:२४)। परन्तु, आत्मिक मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश करने का यह अवसर मनुष्य के पास केवल तभी तक है जब तक वह इस जगत में है। क्योंकि शारीरिक मृत्यु के द्वारा इस जगत से चले जाने के बाद उसके भाग्य को कोई नहीं बदल सकता। पर जितने लोग आत्मिक मृत्यु की स्थिति में इस संसार से चले जाते हैं वे आवश्य ही अनन्त मृत्यु में प्रवेश करेंगे, किन्तु जिन्होंने इस जगत में रहते हुए अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके आत्मिक मृत्यु से रिहाई पा ली है वे अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। इसीलिये बाइबल में एक स्थान पर हम यूं पढ़ते हैं "जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हां, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे।" (प्रकाशित १४:१३)। यहां यह समझ लेना भी बड़ा ही आवश्यक है कि जिस प्रकार अनन्त मृत्यु का अर्थ है हमेशा के लिये

परमेश्वर से दूर होकर नरक में रहना, वैसे ही अनन्त जीवन का अर्थ है हमेशा के लिये परमेश्वर के साथ उस की संगति में रहना।

परन्तु मनुष्य अपने पापों से छुटकारा किस प्रकार प्राप्त कर सकता है ? प्रभु यीशु मसीह के द्वारा। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना २:२)। उसे परमेश्वर ने स्वयं अपनी ही इच्छा से जगत में भेजा, और फिर उसे क्रूस के ऊपर पापियों के लिए बलिदान करके उसे हमारे छुटकारे का दाम ठहराया था। बाइबल कहती है, कि जब हम मसीह में विश्वास लाते हैं और अपने पापों से मन फिराकर मसीह को अपने ऊपर धारण करने के लिए बपतिस्मा लेते हैं तो उसके बलिदान के कारण परमेश्वर हमारे सब पापों को क्षमा करके हमारा उद्धार करता है। (मरकुस १६:१६; गलतियों ३:२७; प्रेरितों १७:३०, ३१)। "इसलिये यदि कोई मसीह में है," बाइबल में लिखा है, "तो वह नई सृष्टि हैं। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो वे सब नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल कर लिया···अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, क्योंकि जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१)।

सो, मित्रो, परमेश्वर कितना महान और दयालु है! उसकी पवित्रता ने मनुष्य को अपने से अलग कर दिया था। परन्तु उसके प्रेम ने मनुष्य को फिर से उसके पास वापस पहुंचा दिया है। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं; जो उसकी इच्छा पर चलते हैं; जिन्होंने उस छुटकारे को पा लिया है जो हमें उसके पुत्र यीशु में मिलता है; वे आत्मिक मृत्यु के पार हो चुके हैं। और शारीरिक मृत्यु उनके निकट अब केवल एक ऐसा साधन है जिस के द्वारा वे इस नाशमान् शरीर से अलग होकर अपने परमेश्वर के पास

हमेशा के लिए रहने के लिए पहुंचेंगे।

मेरी आशा है कि इन बातों के ऊपर आप सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे, और केवल विचार ही नहीं, परन्तु मेरा विश्वास है कि आप उस अनन्त जीवन में प्रवेश करने का भी निश्चय करेंगे जिसे परमेश्वर हम सब को प्रभु यीशु मसीह में देना चाहता है।

# मृत्यु के बाद जीवन के विषय में

आज अपने पाठ में हम इस बात पर विचार करने जा रहे हैं, कि बाइबल मृत्यु के बाद जीवन के विषय में क्या सिखाती है ? क्या मृत्यु के बाद जीवन है ? या क्या मृत्यु ही सब बातों का अन्त है ? यदि मनुष्य इस जीवन के बाद भी वर्तमान रहता है, तो फिर अपनी मृत्यु के बाद वह वहाँ चला जाता है ? मनुष्य के पास एक देह है, और देह के दृष्टिकोण से वह शारीरिक है। परन्तु मनुष्य के पास आत्मा भी है, और इसलिए वह एक ऐसा प्राणी है जो देह और आत्मा दोनों है, अर्थात् मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। देह के दृष्टिकोण से वह नाशमान् है। परन्तु आत्मा के दृष्टिकोण से वह अमर है। क्योंकि मृत्यु के समय देह मिट्टी से मिल जाती हैं और आत्मा देह को छोड़कर चली जाती है। परन्तु आत्मा कहां जाती है ? कुछ लोगों का विचार है कि मृत्यु के समय तुरन्त आत्मा स्वर्ग या नरक में चली जाती है, अर्थात् यदि वह धर्मी है तो वह स्वर्ग में चली जाती है, और यदि अधर्मी है तो वह नरक में चली जाती है। परन्तु यदि यह सच है, तो फिर बाइबल की इस शिक्षा को हम किस प्रकार समझ सकते हैं, कि परमेश्वर ने न्याय का एक दिन निश्चित किया है और उस दिन सब मरे हुए जी उठेंगे और सब का उनके कामों के अनुसार न्याय किया जाएगा और धर्मी स्वर्ग में अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे तथा अधर्मी अनन्त दन्ड भोगने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे ? यदि आत्माएं अभी देह से अलग होकर स्वर्ग तथा नरक में प्रवेश कर लेती हैं, तो फिर पुनरुत्थान तथा

न्याय के दिन की क्या आवश्यकता है ? परन्तु, बाइबल को पढ़कर हम यह देखते हैं कि बाइबल यह शिक्षा कदापि नहीं देती कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा तुरन्त स्वर्ग या नरक में प्रवेश करती है। बाइबल यह अवश्य सिखाती है, कि प्रत्येक मनुष्य के पास आत्मा है क्योंकि मनुष्य परमेश्वर का वंश है (उत्पत्ति २:७; प्रेरितों १७:२८, २९), और मृत्यु के समय आत्मा देह को छोड़कर देह से अलग हो जाती है। परन्तु बाइबल यह नहीं कहती कि देह से अलग होकर आत्मा उसी समय स्वर्ग या नरक में चली जाती है।

प्रभु यीशु जब इस पृथ्वी पर था तो न्याय के दिन के सम्बन्ध में यीशु ने बहुत सी बातें बताई थीं। उसने कहा था कि जिस दिन वह फिर से प्रकट होगा उस दिन पृथ्वी के सारे लोग उसके सम्मुख खड़े होंगे और वह उन सबके कामों के अनुसार उनका न्याय करेगा, और उन सब को उनका प्रतिफल देगा और उस दिन धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और अधर्मी अनन्त दन्ड भोगने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५)। एक अन्य स्थान पर भी जब वह लोगों को न्याय के सम्बन्ध में बता रहा था तो उसने उनसे कहा था कि, "इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५:२८, २९)। फिर प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह लिखकर यूं कहता है "अवश्य है कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (२ कुरिन्थियों ५:१०)। एक अन्य जगह वह कहता है कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है

और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०, ३१)। सो, बाइबल की इन बातों को ध्यान में रखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्वर्ग तथा नरक के अतिरिक्त कोई और भी ऐसा आत्मिक स्थान है जहां आत्माएं मृत्यु के समय से लेकर पुनरुत्थान तथा न्याय के दिन के समय तक रहती हैं। सो वह कौन सा मध्य स्थान है जहां आत्माएं मृत्यु के समय शरीर से अलग होकर, प्रवेश करती हैं, और पुनरुत्थान तथा न्याय के दिन तक वहीं रहेंगी ?

इस सम्बन्ध में प्रभु यीशु ने लोगों से एक बार इस प्रकार कहा था, कि, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा, हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। फ़िर उसने कहा, हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे

पांच भाई हैं, वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उससे कहा, उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें। उसने कहा, नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएंगे उसने उस से कहा; कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।" (लूका १६:१९-३१)।

यहां, इस वर्णन में प्रभु यीशु ने हमारा ध्यान कुछ बड़ी ही खास बातों के ऊपर दिलाया है। यीशु ने कहा, कि दो मनुष्य इस पृथ्वी पर थे, और दोनों ही की मृत्यु हुई। परन्तु मृत्यु के बाद एक तो ऐसी जगह पहुंचा जहां सुख तथा आनन्द था, और दूसरा ऐसी जगह गया जहां वह पीड़ा में तड़प रहा था। उस धनवान के विषय में हम पढ़ते हैं कि वह उस समय अधोलोक में था। परन्तु लाज़र उस समय कहां था ? वास्तव में लाज़र भी उस समय अधोलोक में ही था। क्योंकि अधोलोक वह मध्य स्थान है जहां मनुष्य की आत्मा मृत्यु के समय से लेकर पुनरुत्थान तथा अन्तिम न्याय के समय तक रहेगी। बाइबल में प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय के सत्ताईस तथा इक्कतीस पदों में हम पढ़ते हैं कि मृत्यु के बाद प्रभु यीशु की आत्मा भी अधोलोक में गई थी। परन्तु अपने साथ क्रूस पर चढ़े विश्वासी डाकू से यीशु ने कहा था, "कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" (लूका २३:४३)। सो इस से हम देखते हैं, कि अधोलोक वास्तव में वह आत्मिक स्थान है जहां आत्माएं देह से अलग होकर प्रवेश करती हैं। और, अधोलोक में दो भाग हैं, अर्थात् एक भाग तो वहां स्वर्गलोक कहलाता है जहां सब धर्मी प्रवेश करते हैं, और अधोलोक का दुसरा भाग वह पीड़ाजनक स्थान है जहां सब अधर्मी प्रवेश करते है।

अधोलोक शब्द का अर्थ है-अनदेखा। यानि अधोलोक ऐसा स्थान है जिसे मनुष्य अपनी शरीरिक आंखों से नहीं देख सकता।

फिर इस सम्बन्ध में प्रभु यीशु के इस कथन पर भी हमारा ध्यान जाता है कि देह से अलग आत्माओं के इस स्थान में जो दो भाग हैं उनके बीच में एक ऐसा गड़हा ठहराया गया है जिसके कारण स्वर्गलोक से कोई पीड़ा जनक स्थान पर नहीं जा सकता और न कोई पीड़ाजनक स्थान से स्वर्ग लोक में आ सकता है। इस से प्रभु यीशु के कहने का अभिप्राय यह है कि अपनी मृत्यु के बाद मनुष्य को जहां जाना है उसे मनुष्य इसी जीवन में निश्चित कर सकता है। क्योंकि एक बार मृत्यु के द्वारा देह से अलग होकर मनुष्य जब अधोलोक में चला जाएगा तो न तो वहां से वह वापस आ सकता है और न वहां वह अपने स्थान को बदल सकता है। अन्तिम न्याय के दिन तक वह वहीं पर रहेगा।

बाइबल में लिखी इन बातों को पढ़कर आज हमें यह शिक्षा तथा चेतावनी मिलती है कि हम अपने आप को जांचें ; अपने जीवनों को परखें, यह जानने के लिये कि आज हम कहां हैं। और निश्चय ही, जहां हम आज हैं वहीं पर हम आनेवाले जीवन में भी होंगे। यदि आज हम पाप तथा अधर्म के भीतर हैं तो मृत्यु के बाद हम उसी स्थान पर जाएंगे जहां सब पापी तथा अधर्मी हैं। परन्तु यदि आज हम परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हैं तो हम जानते हैं कि मृत्यु के बाद देह से अलग होकर हम उस स्थान में प्रवेश करेंगे जहां सब धर्मी हैं। और न्याय के दिन जब हम अपने प्रभु के सामने आएंगे तो वह स्वर्ग में हमें अनन्त जीवन देगा, परन्तु सब अधर्मी उस दिन अनन्त विनाश का दन्ड पाने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५.४६; २ थिस्सलुनीकियों १:७-१०।

क्या आपने परमेश्वर के अनुग्रह से उस उद्धार को प्राप्त कर लिया है जो वह हमें अपने पुत्र यीशु मसीह के भीतर देता है ? बाइबल में लिखा है कि "अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों ८:१)। क्योंकि उसे अपने अनुग्रह से परमेश्वर ने "हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"

(२ कुरिन्थियों ५:२१)। परमेश्वर ने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। बाइबल में लिखा है कि यदि कोई मनुष्य प्रभु यीशु में विश्वास लाएगा और पाप से मन फिराएगा और अपने सब पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा तो वह यीशु के बलिदान के कारण अपने सब पापों से उद्धार पाएगा। (प्रेरितों २२:१६; गलतियों ३ : २६, २७; प्रेरितों २:३८)।

मित्रो, परमेश्वर चाहता है कि हम सब उसकी आज्ञा को मानकर अपने आपको तैयार करें, ताकि जब हम मृत्यु के द्वारा इस शरीर को त्यागकर इस जगत से चले जाएं तो हम उस जगह प्रवेश करें जो उसने अपने लोगों के लिये तैयार की है। (यूहन्ना ३:१६; प्रकाशित-वाक्य २१:१-८)

# पुनरुत्थान के विषय में

इस समय हम उन बातों के ऊपर विचार करने जा रहे हैं जिनके विषय में हमें पवित्र बाइबल में मिलता है। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। इस पुस्तक में हमें वे बातें मिलती हैं जिन्हें परमेश्वर हमें बताना चाहता है। यह पुस्तक हमें स्वर्ग और नरक के विषय में बताती है। इस किताब में हमें जीवन का सुसमाचार मिलता है। यदि हम यह जानना चाहते है, कि पाप क्या हैं ? यदि हम जानना चाहते हैं कि पाप से छुटकारा किस प्रकार मिल सकता है, और यदि हम जानना चाहते हैं कि मनुष्य क्या है ? वह पृथ्वी पर कहाँ से आया है ? और मृत्यु के बाद वह कहां चला जाता है ? तो हमें बाइबल को पढ़ना चाहिए। बाइबल को सम्बोधित करके परमेश्वर की पुस्तक का लेखक एक स्थान पर यूं कहता है, कि "सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरण से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिये उपयोगी है।" (२ तीमुथियुस ३:१६)। आज हम अपने पाठ में इस बात के ऊपर विचार करेंगे कि बाइबल पुनरुत्थान के विषय में क्या शिक्षा देती है।

पुनरुत्थान अर्थात मुर्दों का जी उठना बाइबल की एक बड़ी ही खासा शिक्षा है। वास्तव में मसीही धर्म की नेंव ही पुनरुत्थान की शिक्षा के ऊपर है। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि जो यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर जगत के पापों के लिये मरने को आया था; वह अपनी मृत्यु के पश्चात् तीसरे दिन फिर से जी उठा था। और वास्तव में यीशु का जी उठना बड़ा ही आवश्यक था, क्योंकि उसने अपनी मृत्यु से पूर्व यह दावा किया

था,कि मैं तीसरे दिन फिर जी उठूंगा। सो यदि वह न जी उठता तो उस को सच्चा कौन मानता या कौन उस पर विश्वास लाता, और कौन उसे परमेश्वर का पुत्र मानता ? परन्तु उसका जी उठना इसलिये भी आवश्यक था ताकि वह जगत का उद्धारकर्त्ता ठहरे। क्योकि कोई मरा हुआ इन्सान किसी को नहीं बचा सकता; केवल एक ज़िन्दा व्यक्ति ही किसी को बचा सकता है। बाइबल में जब हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जिन्हों ने आरम्भ में प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रचार किया था तो यह बात हमारी आंखों से छिपी नहीं रह जाती कि प्रभु यीशु का पुनरुत्थान उनके प्रचार का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण हिस्सा था।

प्रेरित पौलुस, प्रभु यीशु के सुसमाचार का एक प्रचारक, बाइबल में, १ कुरिन्थियों १५ में, लिखकर इस प्रकार कहता है : "सो जबकि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं? यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है। और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ, बरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी है, कि उसने मसीह को जिला दिया, यद्यपि नहीं जिलाया, यदि मरे हुए नहीं जी उठते। और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। बरन जो मसीह में सो (या मर) गए हैं, वे भी नाश हुए। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।" (१ कुरिन्थियों १५:१२-१९)।

यहां जिस बात को प्रेरित पौलुस विशेष रूप से बताना चाह रहा है वह यह है, कि, मुर्दों का जी उठना उसी प्रकार से सम्भव है जैसे कि मसीह स्वयं जी उठा था। क्योंकि वह भी एक मनुष्य था; वह मनुष्य की

तरह ही पृथ्वी पर रहा और मनुष्यों की तरह वह मरा। किन्तु परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया। जिन लोगों से पौलुस उस समय वास्तव में इस सम्बन्ध में बात कर रहा था वे लोग इस बात से परिचित थे कि यीशु ससीह जी उठा है। वे यीशु के जी उठने से इन्कार नहीं कर सकते थे। सो वह उनसे कहता है, कि जिस प्रकार मसीह जी उठा है उसी तरह से पुनरुत्थांन के दिन सब लोग जी उठेंगे। परन्तु क्यों? सब लोग क्यों जी उठेंगे ?

इस प्रश्न का उत्तर हमें प्रभु यीशु के इन शब्दों में मिलता है; यीशु ने कहा था, कि, "इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५:२८, २९)। सो हम देखतें हैं, कि प्रभु यीशु की शिक्षा के अनुसार पुनरुत्थान की आवश्यकता इसलिये है ताकि प्रत्येक जन अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला पाए। बाइबल में लिखा है कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिला कर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०, ३१)। फिर एक अन्य जगह पर बाइबल में यूं लिखा है : "क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाय कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह द्वारा किये हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५:१०)।

परन्तु किसका पुनरुत्थान होगा ? आत्मा का या देह का ? कुछो लोग ऐसा सोचते हैं कि जब प्रभु यीशु का पुनरुत्थान हुआ था त उसकी देह को नहीं परन्तु आत्मा को जिलाया गया था। यह विचार

बिल्कुल ग़लत है। क्योंकि आत्मा को तो पुनरुत्थान की आवश्यकता ही नहीं है; क्योंकि आत्मा कभी नहीं मरती; आत्मा देह से अलग होकर भी विद्यमान रहती है और अनन्तकाल के लिए विद्यमान रहेगी। पुनरुत्थान की आवश्यकता देह को है और वास्तव में देह का ही पुनरुत्थान होगा। परन्तु यह किस प्रकार होगा ?

प्रेरित पौलुस इस विषय में इस प्रकार कहता है. "जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उसकी विशेष देह·····मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है।" (१ कुरिन्थियों १५:३६-३८, ४२-४४)। यहां परमेश्वर का वचन हमारा ध्यान उस मरे हुए बीज की तरफ दिला रहा है जिसे हम लेकर भूमि में गाड़ देते हैं; वह मरा हुआ दाना मिट्टी में मिल जाता है। परन्तु कुछ ही समय पश्चात् वही दाना या बीज एक नई देह लेकर मिट्टी में से बाहर निकल आता है। यह कैसे सम्भव हो सकता है ? हम इस बात को नहीं समझ सकते। हम केवल यही कह सकते हैं कि यह परमेश्वर की सामर्थ है। परमेश्वर अपनी सामर्थ से उस दाने को एक नई देह के साथ फिर से जिला देता है। यह बात हमारी समझ में परे है, परन्तु यह एक सच्चाई है। और ऐसे ही पुनरुत्थान के दिन होगा। उस दिन वे सब जी उठेंगे जितने मिट्टी में मिल चुके हैं। स्वाभाविक देह मिट्टी में मिलेगी और आत्मिक देह जी उठेगी। जिस प्रकार भूमी में जब बीज को डाला जाता है तो वही बीज बाहर नहीं

आ जाता परन्तु वह एक दूसरी देह के साथ बाहर निकलता है। ऐसे ही मृतको का जी उठना भी होगा। जो देह जी उठेगी वह एक बदली हुई देह होगी; वह शारीरिक नहीं परन्तु एक आत्मिक देह होगी। वह एक ऐसी देह होगी जो कभी मरेगी नहीं, अर्थात् जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा; और जो अपनी आत्मा के साथ एक होकर हमेशा के लिये स्वर्ग में या नरक में विद्यमान् रहेगी। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।" (मत्ती १०:२८)। यहां से हम यह सीखते हैं कि नरक में आत्मा और शरीर दोनों डाले जाएंगे और ऐसे ही स्वर्ग में भी आत्मा और शरीर दोनों रहेंगे। पुनरुत्थान के दिन प्रत्येक मनुष्य की आत्मा अधोलोक में से निकल आएगी, और प्रत्येक आत्मा अपनी-अपनी जिलाई गई आत्मिक देह के भीतर प्रवेश करेगी, और तब प्रत्येक मनुष्य का न्याय किया जाएगा। और उस दिन प्रभु की इच्छानुसार सब धर्मी लोग हमेशा का आनन्द पाने के लिये स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और सारे अधर्मी हमेशा का दन्ड भोगने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)।

प्रेरित पौलुस परमेश्वर की प्रेरणा से लिखकर यूं कहता है, कि, "मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। देखो मैं तुम से भेद की बात कहता हूं कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा। : क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरनहार

देह अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन, जो लिखा है, पूरा हो जायेगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही ? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा ? मृत्यु का डंक पाप हैं; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।" (१ कुरिन्थियों १५:५०-५७)।

क्या आपने उस जय को अर्थात उस विजय को प्राप्त किया है जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हमें मिलती है ? यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया था, और हमारा उद्धार करने के लिये फिर से जी उठा था। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि यदि हम उस में विश्वास लाएंगे और अपने पापों से मन को फिराएंगे, और उस की इच्छानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर उसकी सब आज्ञाओं का का पालन करेंगे, तो हम अपने पाप के कारण नरक में नाश नहीं होंगे परन्तु यीशु के बलिदान के कारण स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे।

मित्रो, आप से निवेदन करके मैं यह कहना चाहूंगा कि इससे पहिले कि वह समय आए जबकि आप की देह और आत्मा अलग हो जाएंगे, और इस से पहिले फिर पुनरुत्थान और न्याय का वह दिन आए, जिसमें परसेश्वर सब लोंगों का न्याय करेगा, आप इस बात को निश्चित कर लें कि आप प्रभु यीशु मसीह के भीतर हैं।

प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिए आप को शक्ति दे।

# न्याय के विषय में

क्या आपने कभी किसी मनुष्य को यह कहते सुना है कि, मुझे परमेश्वर या प्रभु का कोई दूत दिखाई दिया है और उसने मुझ पर कुछ विशेष बातों को प्रकट किया है ? अकसर कुछ लोगों को हम ऐसा कहते सुनते हैं। अब यह हो सकता है कि किसी व्यक्ति को इस प्रकार का कोई सपना आया हो या कोई मनोवैज्ञानिक रूप का अनुभव हुआ हो। परन्तु निश्चय ही हम इस बात को जानते हैं कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से आज न तो किसी को कोई संदेश दे रहा है और न ही अपनी इच्छा को बता रहा है। क्योंकि जो कुछ भी परमेश्वर मनुष्य को बताना चाहता है वह सब उसने मनुष्य को बता दिया है। उसने बाइबल के द्वारा अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिये सारे जगत को बता दिया है। मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चले। बाइबल किसी एक धर्म की पुस्तक नहीं है परन्तु यह परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। इस किताब में परमेश्वर की वे बातें लिखी हुई हैं जिन्हें वह पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य को बताना चाहता है। बाइबल में हमें जगत की उत्पत्ति के बारे में मिलता है, और मनुष्य का इतिहास मिलता है। बाइबल हमें बताती है, कि पृथ्वी पर मनुष्य कैसे आया, मनुष्य की स्थिति अब क्या है, और मृत्यु के बाद उसका क्या होगा। इस पुस्तक को पढ़कर हम इस बात से परिचित होते हैं कि मनुष्य को आरम्भ में परमेश्वर ने स्वयं अपने ही स्वरूप पर बनाया था। परन्तु मनुष्य ने पाप करके अपने उस

आत्मिक स्वरूप को अपवित्र बना लिया था। प्रत्येक मनुष्य, बाइबल में लिखा है, अपने ही पाप तथा अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से अलग है। (यहेजकेल १८:२०-२४)। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्यों को एक मार्ग दिया है जिस के द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके फिर से परमेश्वर के पास उसकी संगति में वापस आ सकता है। और वह मार्ग है प्रभु यीशु मसीह। जो परमेश्वर की इच्छा से पृथ्वी पर आया था और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ।

परन्तु बाइबल का संदेश यहीं समाप्त नहीं हो जाता। इस के आगे परमेश्वर का वचन पृथ्वी के सारे लोगों के सामने एक बड़ी ही गम्भीर चेतावनी रखता है, और वह चेतावनी यह है, कि सब मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों ९:२७)। मनुष्य पृथ्वी पर पशुओं के समान नहीं है जो कुछ समय तक पृथ्वी पर रहते हैं और फिर मर जाते हैं और तब हमेशा के लिये मिट जाते हैं। परन्तु जिस प्रकार परमेश्वर अमर तथा अनन्त है, और हमेशा तक जीवित रहेगा वैसे ही मनुष्य भी हमेशा विद्यमान रहेगा क्योंकि मनुष्य को आरम्भ में परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप पर उत्पन्न किया था। सब मनुष्यों के लिए एक बार मरना नियुक्त है, इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य पशुओं के समान मिट जाता है, परन्तु इस का अर्थ यह है कि मृत्यु के द्वारा मनुष्य का वह आत्मिक व्यक्तित्व, जिसे उसने आरम्भ में परमेश्वर से प्राप्त किया था, उसकी देह से अलग हो जाता है। यहां इस बात पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर का वचन हमें यह नहीं बताता कि मरने के बाद मनुष्य फिर से जन्म लेता है परन्तु प्रत्येक मनुष्य केवल एक ही बार जन्म लेता है और केवल एक ही बार मरता है, और ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य का एक दिन न्याय किया जाएगा।

बाइबल में एक जगह हम पढ़ते हैं कि जब प्रेरित पौलुस प्रभु यीशु के सुसमाचार को सुनाने के लिये अथेने नाम के एक नगर में गया तो

वहां उसने लोगों को पाया कि वे बड़े ही धार्मिक प्रवृति के हैं। लेकिन वे सब परमेश्वर की उपासना मूरतों के द्वारा कर रहे थे। उन्होंने अपनी बुद्धि से ढाल कर परमेश्वर के अनेक रूप बना रखे थे। किन्तु पौलुस ने उन से कहा, कि मैं तुम्हे उसी परमेश्वर का संदेश सुनाता हूं जिसे तुम बिना जाने पूजते हो। और फिर सच्चे परमेश्वर के विषय में बताकर उस ने उन से कहा कि "परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहरांया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:२९-३१)।

यहां हम इस बात को देखते हैं कि परमेश्वर ने न्याय का एक दिन नियुक्त किया है, और न्याय के उस दिन के आने से पहिले परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्य अपना मन फिराएं। क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण या अपने पाप के कारण नाश हो। परन्तु वह सबका उद्धार करना चाहता है। उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर जगत के सारे लोगों के लिये बलिदान किया है। किन्तु उसकी आज्ञा है कि जगत में हर जगह सारे लोग अपना मन फिराएं। जो लोग पाप में है वे पाप से अपना मन फिराएं; और जो लोग अज्ञानता के साथ उसकी आराधना कर रहे हैं वे अपनी अज्ञानता से मन फिराएं और उसके पास वापस आएं, तथा उसी प्रकार उसकी आराधना वा उपासना करें जैसे कि उसने मनुष्य को अपने वचन की पुस्तक में बताया है। अथेने के उन लोगों से पौलुस यह भी कहता है कि, "जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर

हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।" और, "न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों १७:२४, २५)। उन लोगों ने सोने, रूपे तथा पत्थरों से ढालकर अपनी कल्पना से न केवल परमेश्वर की मूर्तियां ही बना रखी थीं। परन्तु उन मूर्तियों को उन्होंने बड़े-बड़े सुन्दर भवनों के भीतर रखा हुआ था। और वे उनके सामने झुकते थे, उनसे प्रार्थना करते थे; और उनके आगे फूल-फल और मेवे चढ़ाते थे। परन्तु पौलुस उनसे कहता है, कि तुम सच्चे तथा जीवते परमेश्वर से अज्ञान हो, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान जिस ने आकाश तथा पृथ्वी को बनाया है, वह मनुष्यों के हाथों से बनाए हुए घरों के भीतर नहीं रहता। उसकी तुलना जगत की किसी भी नाशमान् वस्तु के साथ नहीं की जा सकती और न उसे जगत की किसी भी नाशमान् वस्तु की कोई आवश्यकता है।

मित्रो, आज जगत में सब मनुष्यों को इस बात को सीखने की, तथा इस बात की ओर ध्यान देने की कितनी भारी आवश्यकता है, कि हम सब का परमेश्वर जिसने सारी सृष्टि की रचना की है, वह सर्वशक्तिमान, आकाश तथा पृथ्वी का स्वामी, मनुष्यों के हाथों से बनाए गए भवनों के भीतर नहीं रह सकता। उसको किसी भी रूप या चित्र में ढाला या गढ़ा नहीं जा सकता। उसे फल-फूल तथा मेवों की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह कोई मनुष्य नहीं है। परन्तु उसे मनुष्य से प्रेम है। क्योंकि मनुष्य को उसने अपनी आत्मिक समानता पर बनाया है। उसने मनुष्य को अपना आत्मिक जीवन दिया है, और इस कारण वह मनुष्य को अज्ञानता तथा पाप में नाश होने से बचाना चाहता है। इसलिये उसकी यह इच्छा है तथा उसकी यह आज्ञा है कि प्रत्येक मनुष्य सब जगह अपना-अपना मन फिराएं—सारी अज्ञानता से और अपने सारे पापों से से। वह चाहता है, कि हम

सब प्रभु यीशु मसीह के ऊपर विश्वास लाए, क्योंकि वह हम सबके पापों का प्रायश्चित है।

प्रेरित्त पतरस ने जब येरुशलेम नगर में परमेश्वर तथा उसके सुसमाचार का प्रचार किया था, और जब लोग उसमें विश्वास ले आए थे और यह जानना चाहते थे कि अब "हम क्या करें ?" तो पतरस ने उनसे यूं कहा था : "मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु नसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३८)।

मनुष्यों को अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने की आवश्यकता है। और पापों की क्षमा प्राप्त करने का केवल एक ही उपाय है, अर्थात् यीशु मसीह, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से हम सबके पापों का प्रायश्चित है। परमेश्वर को हम कोई भेंट चढ़ा कर अपने पापों से क्षमा प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि न तो उसे पृथ्वी की नाशमान वस्तुओं का कोई प्रयोजन है और न ही वह ऐसी वस्तुओं का अभिलाषी है। वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञा को मानें, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाएं, और अपना मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर बपतिस्मा लें। परन्तु यदि हम उसके वचन में लिखी हुई बातों पर कोई ध्यान नहीं देते तो हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने एक ऐसा दिन नियुक्त किया है जिस में वह सब मनुष्यों का न्याय करेगा। बाइबल हमें बताती है कि उस दिन परमेश्वर की सामर्थ से सारे मरे हुए लोग जी उठेंगे और तब उन सब का न्याय किया जाएगा जिन्होंने आदम से लेकर जगत के अन्त तक पृथ्वी पर जीवन व्यतीत कियो है। बाइबल कहती है : "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५:२०)।

क्या आप परमेश्वर के न्याय के दिन उसके सामने आने के लिए

तैयार हैं ? यदि आपने अभी तक उस से मिलने के लिये अपनी आत्मा को तैयार नहीं किया है तो अभी अवसर है, कि आप उसकी आज्ञा को मानकर तैयार हो जाएं। प्रभु यीशु ने न्याय के दिन के सम्बन्ध में कहा था कि उस दिन धर्मी अनन्त जीवन पाने के लिये स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, परन्तु अधर्मी अनन्त दन्ड भोगने के लिये नरक में प्रवेश करेंगे। (मत्ती. २५:४६)।

सो परमेश्वर हम सब को ऐसी बुद्धि दे,कि हम उसकी आज्ञा को मानकर अनन्त जीवन में प्रवेश करें।

# पाप के विषय में

आज हम अपने पाठ में इस बात को देखेंगे कि बाइबल हमें पाप के विषय में क्या सिखाती है। पाप मनुष्य की एक बहुत बड़ी समस्या है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में बनाया था तो उस समय मनुष्य परमेश्वर के ही समान धर्मी तथा पवित्र था, क्योंकि बाइबल में लिखा है कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर तथा अपनी ही समानता में बनाया था। परन्तु मनुष्य अधिक समय तक परमेश्वर की समानता पर बना न रह सका, क्योंकि मनुष्य अपने शरीर की अभिलाषा और अपनी आखों की अभिलाषा और अपनी जीविका के घमन्ड पर काबू न पा सका, और उसने वह काम किया जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था। पृथ्वी पर जब तक मनुष्य है तब तक पाप भी पृथ्वी पर आवश्य ही रहेगा। परन्तु पाप का परिणाम बड़ा ही भयंकर है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि पाप का परिणाम मृत्यु है। (रोमियों ६:२३)। इस मृत्यु का अभिप्राय शारीरिक मृत्यु से नहीं है, परन्तु पाप के परिणाम स्वरूप जो मृत्यु मनुष्य को मिलती है वह आत्मिक मृत्यु है। बाइबल कहती है, कि तुम्हारे अपराध वा अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है। (यशायाह ५९:१, २) परमेश्वर से अलग होना ही मनुष्य के लिये वास्तविक मृत्यु है। क्योंकि शारीरिक मृत्यु के द्वारा केवल मनुष्य का शरीर ही नाश होता है, परन्तु उसकी आत्मा शरीर से अलग होकर विद्यमान रहती है। लेकिन आत्मिक मृत्यु वह है जिसके कारण मनुष्य की आत्मा हमेशा के लिए परमेश्वर

से अलग होकर उस से दूर रहती है ।

जब पृथ्वी पर पहिले मनुष्य, अर्थात् आदम तथा हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके पाप किया था तो वे इसी तरह आत्मिक रूप से मर गए थे, क्योंकि वे परमेश्वर से दूर हो गए थे। और ऐसे ही आज प्रत्येक मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से दूर है और फल-स्वरूप आत्मिक रूप से मरा हुआ है । परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हैं कि मनुष्य आदम के पाप के कारण परमेश्वर से दूर है। क्योंकि परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है, कि, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फ़ल और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल १८:२०) और फिर यह लिखा है, "कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिच कर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है। तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४,१५)।

यहां मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पाप के कारण परमेश्वर से दूर है। यह सही है कि आदम तथा हव्वा के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया था और उसके परिणाम स्वरूप शारीरिक पीड़ाएं तथा शारीरिक मृत्यु मनुष्यों में फैलीं। लेकिन आदम के पाप के कारण परमेश्वर की दृष्टि में कोई भी जन दोषी नहीं हैं। पाप की मजदूरी या पाप का परिणाम मृत्यु है अर्थात् परमेश्वर से अलग होना है, परन्तु यह मजदूरी या परिणाम प्रत्येक मनुष्य के स्वयं अपने ही पापों का फल है। इसलिये बाइबल नन्हें बालकों को दोषी नहीं ठहराती। बाइबल में छोटे बच्चों को निष्पाप तथा पवित्र कहा गया है। यीशु ने एक बार छोटे बच्चों के सम्बन्ध में कहा था कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती १९:१४) एक बार जब यीशु के चेले उस से पूछने लगे थे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है? तो लिखा है, कि "इस पर उसने एक बालक को पास बुला कर उन के

बीच में खड़ा किया। और कहा मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८:२,३)। सो हम देखते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में छोटे बच्चे पापी नहीं हैं परन्तु वे पवित्र हैं और परमेश्वर के राज्य के योग्य है। मनुष्य पापी उस समय बनता है जब वह बालकपन की अवस्था को पार करके उस अवस्था में प्रवेश करता है जहां वह परमेश्वर की दृष्टि में अपना लेखा देने के योग्य बन जाता है।

ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करके एक जगह बाइबल कहती है, कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)। सबने, अर्थात् जो लोग अपना लेखा देने के योग्य हैं, व्यक्तिगत रूप से पाप किया है और इस कारण से वे परमेश्वर से दूर हैं। क्या आपने कभी इस बात के ऊपर विचार किया है कि आप परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी हैं और इसलिये उस से अलग और दूर हैं ? आप एक अच्छे इन्सान हो सकते हैं; आप के भीतर अच्छे गुण हो सकते हैं; अच्छी योग्यताएं हो सकती हैं, कदाचित आप धर्म के काम भी करते हों, और परमेश्वर के ऊपर विश्वास रखकर शायद आप उससे प्रार्थना भी करते हों। परन्तु बाइबल में लिखा है, कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। बाइबल कहती है, कि यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं है तो हम अपने आप को धोखा देते हैं। (१ यूहन्ना १:८)। सो पाप सबने किया है। सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। सब परमेश्वर से अलग हैं। परन्तु इसका अर्थ क्या है ? परमेश्वर से अलग होने का अर्थ क्या है ? परमेश्वर से अलग होने का अर्थ है आत्मिक मृत्यु, अर्थात् एक ऐसी स्थिति में होना जहां मनुष्य का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ नहीं हैं। और बाइबल हमें बताती है कि यदि इस जीवन के रहते हम अपनी इस स्थिति को नहीं बदलेंगे तो आत्मिक मृत्यु की यह स्थिति अनन्त मृत्यु में बदल जाएगी—जिसका अर्थ हैं परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग और दूर हो जाना।

परन्तु हम अपनी इस स्थिति को कैसे बदल सकते हैं? यदि परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना पाप है, तो उसकी आज्ञा का पालन करना उद्धार है। परमेश्वर की बाइबल हमें बताती है कि हमें सबसे पहिले अपने विश्वास को बदलना चाहिए। अर्थात् अपने विश्वास को सभी अन्य वस्तुओं पर से हटाकर उसके पुत्र यीशु मसीह के ऊपर यह विश्वास लाएं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है और उसके बलिदान के द्वारा परमेश्वर हमारे सब पापों को क्षमा करेगा। बाइबल में यीशु के सम्बन्ध में लिखा है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इसलिए बलिदान कर दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह अपने पापों से बच जाए। (यूहन्ना ३:१६)। यीशु के सम्बन्ध में बाइबल कहती है कि यद्यपि वह मनुष्य की नाईं प्रकट हुआ और उसने मनुष्यों का सा जीवन पृथ्वी पर व्यतीत किया, और वह हमारी नाईं सब बातों में परखा तो गया किन्तु तौभी वह निष्पाप निकला। (इब्रानियों ४:१५; फिलिप्पियों २:६-९; १ यूहन्ना ३:५)। उसी यीशु को, बाइबल कहती है, परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिए, क्रूस के ऊपर एक पापी की नाईं दन्ड़ दिलवाया, ताकि हम उसमें होकर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर लें और परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१; १ पतरस २:२४; १ यूहन्ना ४:१०)। इसलिए बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर की यह आज्ञा है कि सारे मनुष्य उसके पुत्र यीशु मसीह के ऊपर विश्वास लाएं।

परन्तु पापों से उद्धार पाने के लिए केवल विश्वास लाना ही पर्याप्त नहीं है, किन्तु मन को बदलना भी बड़ा ही आवश्यक है। प्रभु यीशु ने उपदेश देकर एक बार कहा था कि यदि तुम अपना मन नहीं फिराओगे तो तुम अपने पाप में ही नाश हो जाओगे। (लूका १३:३)। मन को बदलने का अर्थ है। अपने दृष्टिकोण तथा व्यवहार में परिवर्तन लाना। अर्थात् जो-जो बातें परमेश्वर की इच्छा के

विरुद्ध है, उन सब को छोड़कर उन बातों पर चलना जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन की पुस्तक मे दी है।

फिर, जब हम अपने मन को बदल लेते हैं तो यह भी आवश्यक है कि हम अपने उन सब पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये प्रभु की आज्ञा को मानें जिनके कारण हम अब तक परमेश्वर से अलग रहे हैं। जो लोग प्रभु यीशु मसीह के भीतर अपने सारे मन से विश्वास ले आते हैं उनके लिये बाइबल में यह आज्ञा लिखी हुई है कि "मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" (प्रेरितों २:३८)। सो पाप से मुक्ति पाने के लिए जिस प्रकार प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाना और पाप से मन फिराना आवश्यक है वैसे ही यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१६)। और बाइबल में यह भी लिखा है कि जो लोग मसीह में बपतिस्मा ले लेते हैं वे मसीह को पहिन लेते हैं,। अर्थात् वे मसीह के भीतर आ जाते हैं। (गलतियों ३:२७)। परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि इनमें से कोई भी आज्ञा छोटे बच्चों के लिये नहीं हैं परन्तु प्रभु की ये सभी आज्ञाएं उन समझदार लोगों के लिये हैं जो परमेश्वर को अपना लेखा देने के योग्य हैं। बपतिस्मा लेने का अर्थ है, जल के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना। पवित्र बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और कब्र में से जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाता है। (रोमियों ६ ३-५)। क्योंकि बपतिस्मा लेने से पहिले मनुष्य पाप से अपना मन फिराकर पाप के प्रति मर जाता है, और फिर बपतिस्मा लेने के द्वारा वह जल-रुपी-कब्र के भीतर गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है। (प्रेरितों ८:३५-३९)।

सो, हम देखते है, कि परमेश्वर की बाइबल न केवल हमें पाप के

परिणाम से ही परिचित कराती है, परन्तु परमेश्वर की यह पुस्तक हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर की आज्ञा मानकर हम पाप से किस प्रकार छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं, और इस प्रकार हम पाप के परिणाम, अर्थात् आत्मिक तथा अनन्त मृत्यु से भी बच सकते हैं।

क्या आप प्रभु की आज्ञा को मानना चाहते हैं ? कदाचित इस सम्बन्ध में आप और कुछ जानना चाहते हों, सो मुझे लिखकर सूचित करें। प्रभु अपने पास आने के लिये आपको शक्ति दे।

# उद्धार के विषय में

इस समय अपने बाइबल अध्ययन में आज हम इस बात के ऊपर विचार करेंगे कि उद्धार पाने के सम्बंद्ध में बाइबल क्या शिक्षा देती है। उद्धार मनुष्य की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को उद्धार की आवश्यकता इसलिये है क्योंकि मनुष्य पापी है, उसके भीतर पाप हैं। उद्धार से हमारा अभिप्राय स्वतंत्रता या छुटकारा पाने से है शायद आप उस जल-प्रलय के वर्णन से परिचित होंगे जो नूह के समय में आया था। बाइबल कहती है कि यद्यपि उस समय पृथ्वी पर सब प्राणियों का अन्त हो गया था परन्तु नूह तथा उसके परिवार के सब लोग लकड़ी के एक जहाज़ के भीतर बैठकर पानी के द्वारा बच गए थे। यह एक प्रकार का उद्धार था। इसी प्रकार बाइबल में हम इस्त्राएलियों के बारे में भी पढ़ते हैं, कि जब वे मिस्र देश के कड़े दासत्व से निकलकर भाग रहे थे तो उन के सामने लाल समुद्र एक बहुत बड़ी समस्या बनकर खड़ा हो गया था। क्योंकि इधर वे समुद्र को पार नहीं कर सकते थे और उधर मिस्र का राजा अपनी फ़ौज को लेकर उन की तरफ़ बढ़ा चला आ रहा था। तब मूसा ने लोगों से कहा था, कि डरो मत, परन्तु खड़े-खड़े उस उद्धार का काम देखो जो आज परमेश्वर तुम्हारे लिये करेगा। (निर्गमन १४:१३)। और फिर मूसा ने अपनी लाठी को समुद्र की ओर बढ़ाया और वह दो भागों में बंट गया और सारे इस्राएली सूखी भूमि पर चलकर समुद्र के पार चले गए। किन्तु जब मिस्त्र की फौज समुद्र तक पहुंची थी तो वह फिर एक हो गया था और वे सब उसी में डूबकर नाश

हो गए इस्राएलियों के लिये यह एक प्रकार का उद्धार था, क्योंकि वेमिस्र के राजा के क्रोध से बच गए थे। सो उद्धार पाने का अर्थ है स्वतंत्र हो जाना या छुटकारा पा लेना।

बाइबल में प्रभु यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता कहा गया है। वास्तव में बाइबल कहती है कि जगत में यीशु का जन्म ही उद्धार के लिये हुआ था, अर्थात् वह उद्धार करने के लिए जगत मे आया था। स्वयं यीशु ने ही लोगों से कहा था कि मैं पृथ्वी पर खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने को आया हूं। (लूका १६:१०)। यीशु जगत में सांसारिक समस्याओं से लोगों का उद्धार करने को नहीं आया था। यद्यपि उसने भूखों को खाना खिलाया था और बीमारों कों चंगा किया था, परन्तु वह भूख और बीमारी से लोगों का उद्धार करने को नहीं आया था। यीशु वास्तव में लोगों का पाप से उद्धार करने को आया था। वह पाप और अधर्म में खोए हुए सब लोगों को बचाने के लिए आया था। और यह उद्धार का काम उसने कैसे किया? बाइबल में इस सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं कि यद्यपि "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की, उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे।" (रोमियों ३:२३-२५)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भवितहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी

ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगें ? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे ?" (रोमियों ५:६-१०)।

सो हम देखते हैं, कि यीशु अपनी मृत्यु के द्वारा हमारा उद्धार करता है। परमेश्वर ने उसे हम सब के पापों का प्रायश्चित करने के लिये मृत्यु दंड दिलवाया। अपने पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा न केवल परमेश्वर ने अपने महान प्रेम को ही जगत पर प्रकट किया, परन्तु जगत के पापों के लिये उसे दन्डित करके परमेश्वर ने अपने पवित्र न्याय को भी मनुष्यों पर प्रकट किया है। क्योंकि यदि यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित न हुआ होता, और यदि हमारे पापों का दन्ड यीशु अपने ऊपर न ले लेता, तो आज हमारे पास क्या आशा होती? क्या हम यह आशा कर सकते थे कि अपने इस जीवन के बाद हम परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ? कदापि नहीं। क्योंकि हम अपने पाप तथा अधर्म के कामों के भीतर खोए हुए होते और उन्हीं के भीतर मर भी जाते और इस जगत से चले जाते और हमेशा के अंधकार में खो जाते। परमेश्वर धर्मी तथा पबित्र है, और उसके साथ कोई भी अपवित्र वस्तु नहीं रह सकती। वह जानता है कि मनुष्यों में सब के सब अपवित्र और अधर्मी हैं और कोई भी उसके पास आने के योग्य नहीं है। सो उसने मनुष्य को पवित्र तथा धर्मी बनने का एक उपाय बताया है। उसने अपने सामर्थी वचन को अपने पुत्र की समानता में जगत में भेजकर उसे जगत के पापों के लिए बलिदान कर दिया: ताकि उसके द्वारा हम सब अपने पापों से बचकर पवित्र और धर्मी बन जाएं। अपने पुत्र को जगत में भेजकर उसने अपने प्रेम को प्रकट किया है और सारे जगत के पापों के लिए उसे दन्डित करके परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता को प्रकट किया है।

सो बाइबल से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यीशु जगत का उद्धार-कर्त्ता है। उसे परमेश्वर ने उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत का उद्धारकर्त्ता ठहराया है। परन्तु इस से हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि यीशु की मृत्यु के द्वारा सारे जगत का उद्धार हो गया है। क्योंकि बाइबल में यीशु के बारे में यूं लिखा है कि "पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया है" (इब्रानियों ५:८,९)। सो बाइबल की शिक्षानुसार यीशु आज उनका उद्धार करता है जो उसकी आज्ञा को मानते हैं।

जिस प्रकार नूह को परमेश्वर ने पानी के द्वारा अपने अनुग्रह से बचाया था, वैसे ही आज परमेश्वर यीशु के द्वारा हमें भी अपने अनुग्रह से बचाता है। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह होते हुए भी नुह के लिये परमेश्वर की आज्ञा को मानना आवश्यक था। परमेश्वर ने उस से कहा था कि तू गोपेर की लकड़ी से एक जहाज़ बनाना, और बाइबल में लिखा है कि नूह ने वैसा ही किया था। परमेश्वर ने नुह को जहाज़ की लम्बाई और चोड़ाई और ऊंचाई का माप भी दिया था, और उस से कहा था कि उसमें एक खिड़की और एक द्वार वनाना और उसके भीतर तीन खन्ड बनाना। और बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि नूह ने परमेश्वर की आज्ञा मानकर प्रत्येक काम वैसे ही किया था जिस प्रकार उसने नूह को आज्ञा दी थी। (उत्पत्ति ६ : २२ ; ७ : ५) परन्तु मान लीजिए यदि नूह परमेश्वर के अनुग्रह पर केवल विश्वास ही रखता और परमेश्वर की आज्ञा को न मानता, तो क्या नूह उस विशाल जल- प्रलय से बच पाता ? कदापि नहीं। क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा को न मानना ही पाप है। और ठीक यही बात आज हमारे उद्धार के सम्बन्ध में भी है। आज हम सब भी परमेश्वर के अनुग्रह से अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार नूह को परमेश्वर ने जल-प्रलय से

बचने का एक उपाय बताया था, उसी प्रकार आज परमेश्वर ने हमें भी पाप में नाश होने से बचने का एक उपाय बताया है। नूह को परमेश्वर ने जहाज़ के भीतर बचाया था और हमें अपने पुत्र यीशु मसीह के भीतर बचाने की उसने प्रतिज्ञा की है। परन्तु यह प्रतिज्ञा उनके लिये है जो उसकी आज्ञा को मानते हैं।

सो हमारा ध्यान इस प्रश्न पर जाता है कि अपने पापों से उद्धार पाने के लिये आज हमें परमेश्वर की कौन सी आज्ञाओं को मानना चाहिए ?

प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि तुम पाप से अपना मन नहीं फिराओगे तो अपने ही पापों में नाश हो जाओगे। (लूका १३ : ३, ५)। सो हमें चाहिए कि हम में से हर एक अपने अपने पाप तथा अधर्म से अपना मन फिराए, अर्थात् यह निश्चय करें कि अब आगे हम अपना जीवन पाप में नहीं बिताएंगे। क्योंकि यदि हम पाप को ही नहीं छोड़ेंगे तो फिर पाप से हमारा उद्धार कैसे हो सकता है? फिर हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि यीशु ने कहा था कि उद्धार उसी मनुष्य का होगा जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा। (मरकुस १६ : १६) अर्थात् उद्धार पाने के लिये हमें यह मन से विश्वास करना चाहिए कि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मरा था; हमें यीशु मसीह में विश्वास करना चाहिए कि वह हमारा उद्धारकर्त्ता है। और, फिर, अपने पापों से उद्धार पाने के लिये, हमें बपतिस्मा लेना चाहिए। क्योंकि यीशु ने कहा है कि उसी का उद्धार होगा जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा। इस सम्बन्ध में नूह के उद्धार का उदाहरण देकर बाइबल का एक लेखक इस प्रकार कहता है, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है, (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (१ पतरस ३:२१)। यहां

लेखक के कहने का तात्पर्य इस बात से है कि जिस प्रकार नूह को परमेश्वर ने पानी के द्वारा बचाया था उसी प्रकार आज हमें भी वह बपतिस्मे के द्वारा बचाता है । और क्योंकि बपतिस्मा पानी के भीतर दफ़न होकर लिया जाता है (रोमियों ६:३-५), इसलिये वह स्पष्ट करके और समझाकर कहता है कि उस से, अर्थात बपतिस्मा लेने से, शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने आप को उसे सौंप देने का अर्थ है ।

आप को उद्धार की आवश्यकता है । पृथ्वी पर सब मनुष्यों को उद्धार की आवश्यकता है । और परमेश्वर सबका उद्धार करना चाहता है । यदि आप उसकी आज्ञा को मानेंगे तो वह अवश्य ही आपके सब पापों से आप का उद्धार करेगा और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा ।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानकारी चाहते हैं तो आप मुझे लिख सकते है । प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको आशीष दे ।